अनुभूति

विभागीय राजभाषा पत्रिका

आठवाँ पुष्प

संरक्षक

चेतन पंडित
कार्यकारी सदस्य

परामर्श मण्डल

मुकेश कुमार सिन्हा
सदस्य (सिविल)

नरेन्द्र कुमार भंडारी
सदस्य (विद्युत)

मुख्य सम्पादक

मुकेश चौहान
सचिव

सम्पादक

नरेश लाल
निदेशक (सिविल)

सह-सम्पादक

राजेश ठक्कर
सहायक जन-सम्पर्क अधिकारी

ओम प्रकाश वर्मा
हिन्दी अनुवादक

सम्पर्क

नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण

नर्मदा सदन, बी-ब्लाक, स्कीम-74, विजय नगर, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2557276 फैक्स : 2559888

प्रकाशन की तारीख : 30 सितम्बर, 2010

अनुभूति

पी. चिदम्बरम

P. CHIDAMBARAM

गृह मंत्री, भारत

HOME MINISTER, INDIA

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियों,

हिंदी दिवस के अवसर पर मेरी शुभकामनाएँ

हमारे देश के सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक ढांचे में आमूल-चूल परिवर्तन की प्रक्रिया जारी है। सूचना-प्रौद्योगिकी क्रान्ति और उन्नत संचार व्यवस्था ने सम्पूर्ण विश्व को एक विश्वग्राम में परिवर्तित कर दिया है। हिंदी का प्रयोग तीव्र गति से हो रहा है। हिंदी को इस स्थान तक पहुंचाने में हिंदीतर भाषी विद्वानों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज, कागजात आदि द्विभाषी रूप में तैयार किए जाते हैं। मूल रूप से हिंदी में किए जाने वाले कार्य, राजभाषा के रूप में हिंदी की बेहतर प्रगति का संकेत होगा। अत: कार्यालयों में हिंदी में मूल टिप्पण व पत्राचार को प्रोत्साहित किए जाने पर विशेष ध्यान दिया जाए। इसके अतिरिक्त, कठिन हिंदी के बजाय सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग, हिंदी की व्यापक पहुँच एवं प्रचार में सहायक साबित होगा।

कम्प्यूटर और सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई तकनीकें विकसित हो रही है। लोगों को महत्वपूर्ण जानकारी और ज्ञान उपलब्ध करवाने में वेबसाइटों की उल्लेखनीय भूमिका है। अत: केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों और कार्यालयों की हिंदी वेबसाइटों पर अंग्रेजी वेबसाइटों के समान नवीनतम एवं पूर्ण जानकारी उपलब्ध होना जरूरी है। आज हमारे कम्प्यूटर बिना किसी कठिनाई के हिंदी में काम करने में पूरी तरह सक्षम हैं। सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हो रही प्रगति का पूरा लाभ हिंदी प्रयोगकर्ता तक पहुंचाने के लिए यह आवश्यक है कि कम्प्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए मानक भाषा एनकोडिंग यानी यूनिकोड का प्रयोग किया जाए। केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों और कार्यालयों को यूनिकोड के प्रयोग से होने वाले लाभ के बारे में बताया गया है और इस दिशा में कुछ प्रगति भी हुई है, लेकिन इस तकनीक का पूरा लाभ उठाने के लिए इस संबंध में प्रभावी कार्रवाई की आवश्यकता है।

स्पष्ट रूप से लक्ष्यों का निर्धारित करते हुए, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रति वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है। मैं, केंद्रीय सरकार के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु ठोस प्रयास करने का आग्रह करता हूं। साथ ही, यह भी अपील करता हूँ कि इस संबंध में भेजी जाने वाली प्रगति रिपोर्टों में वास्तविक और तथ्यपरक आँकड़े एवं सूचनाएँ ही दी जानी चाहिए।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन है किंतु सम्बन्धित अनुदेशों का अनुपालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है। आइए, हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के अपने संवैधानिक और नैतिक दायित्व के निर्वहन का संकल्प लें।

जय हिंद !

नई दिल्ली, 14 सितम्बर, 2010

(पी.चिदम्बरम)

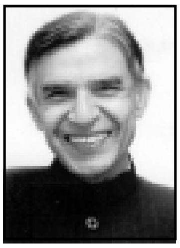

पवन कुमार बंसल
Pawan Kumar Bansal

संसदीय कार्य एवं जल संसाधन मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली - 110001
MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS
&
WATER RESOURCES
GOVERMENT OF INDIA
NEW DELHI- 110001

20 सितम्बर, 2010

संदेश

राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं संस्कृति को कायम रखने के लिए 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया था। इसी महत्वपूर्ण दिवस की गरिमा को बनाए रखने के लिए हिंदी दिवस/हिंदी सप्ताह/हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जाता है। मैं जानता हूँ कि प्राधिकरण के अधिकारी व कर्मचारी हिंदी का बहुत अच्छा ज्ञान रखते हैं और अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग भी करते हैं। किन्तु, इस दिशा में और अधिक प्रयास करने की जरूरत है।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, इन्दौर विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़े के गरिमामय अवसर पर हिंदी राजभाषा पत्रिका 'अनुभूति' के आठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मैं इस कार्य से जुड़े सभी व्यक्तियों को बधाई देता हूँ और इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकानाएँ प्रेषित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

प. बंसल
(पवन कुमार बंसल)

जल संरक्षण - जीवन संरक्षण
Conserve water - Save life

वींसेंट एच. पाला
VINCENT H. PALA

जल संसाधन राज्यमंत्री
भारत सरकार
श्रम शक्ति भवन
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF STATE
FOR WATER RESOURCES
GOVERNMENT OF INDIA
SHRAM SHAKTI BHAWAN
NEW DELHI- 110001

20 सितम्बर, 2010

संदेश

मेरे लिए यह हर्ष का विषय है कि नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण हिंदी पखवाड़े के समापन के अवसर पर अधिकारियों, कर्मचारियों की रचनाओं से सुसज्जित अनुभूति के आठवें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था है। इसमें जनता का शासन है। हमारे संविधान निर्माताओं का यह मत था कि शासकीय कार्य की भाषा हिंदी हो। हम इस दिशा में अग्रसर हैं। वैश्वीकरण के इस समय में जहाँ हम बाह्य संस्कृतियों के अच्छे-बुरे प्रभाव में आते जा रहे हैं, वहाँ राजभाषा को अधिकाधिक आत्मसात करके ही हम अपनी पहचान बनाए रख सकते हैं।

हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण द्वारा किए जा रहे प्रयास नि:संदेह सराहनीय हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अनुभूति पत्रिका का प्रकाशित होने वाला आठवां अंक न केवल प्राधिकरण में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान करेगा बल्कि कर्मचारियों की प्रतिभा को उजागर करने में भी महती भूमिका निभाएगा। मेरी ओर से पत्रिका के प्रकाशन के कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन के अवसर पर शुभकामनाएँ।

(विंसेंट एच.पाला)

जल संरक्षण - जीवन संरक्षण

Conserve water - Save life

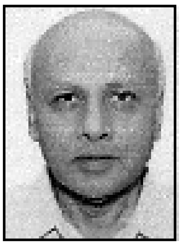

उमेश नारायण पंजियार

UMESH NARAYAN PANJIAR

सचिव
भारत सरकार
जल संसाधन मंत्रालय
एवं
अध्यक्ष
नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण
श्रम शक्ति भवन
रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001
SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF WATER RESOURCES
&
CHAIRMAN
NARMADA CONTROL AUTHORITY
SHRAM SHAKTI BHAWAN
RAFI MARG, NEW DELHI- 110001

20 सितम्बर, 2010

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण अपनी राजभाषा गृह पत्रिका 'अनुभूति' का आठवाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है। प्राधिकरण के अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में प्रशंसनीय कार्य कर रहे है। इसी तारतम्यता में 'अनुभूति' अंक का प्रकाशन उनकी साहित्यिक रूचि का परिचायक है।

अनुभूति का यह आठवाँ अंक लेख, कविताओं एवं महत्वपूर्ण सोच से परिपूर्ण हैं और इसे प्राधिकरण के अधिकारियों एवं कर्मचारियो ने अपनी उत्तम कृतियों से शृंगारित किया है। मैं सभी को उनके इस प्रयास हेतु बधाई देता हूँ। अनुभूति का सम्पादकीय परिवार भी अपने इस उत्तम प्रयास हेतु बधाई का पात्र है।

शुभकामनाओं सहित।

(उमेश नारायण पंजियार)

स्वच्छ सुरक्षित जल - सुन्दर खुशहाल कल

CONSERVE WATER - SAVE LIFE

शुभकामना सन्देश

कार्यकारी सदस्य
नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण
(जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार)

Executive Member
Narmada Control Authority
(Ministry of Water Resources, Govt.of India)

नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'अनुभूति' के आठवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है जो हर्ष का विषय हैं। इस कार्यालय में हिंदी में कार्य करने में निरन्तर प्रगति हो रही है। 'अनुभूति' हिंदी पत्रिका के माध्यम से यहाँ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक, काव्य, तकनीकी लेखन क्षमता एवं अपने विचारों को जनमानस तक पहुँचाने का अवसर प्राप्त होता है। आशा करता हूँ कि 'अनुभूति' के आठवें अंक की लेखन एवं अन्य सामग्री पाठकों के लिये प्रेरणादायक, रूचिपूर्ण एवं उपयोगी होगी।

मैं इस अवसर पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि वे निरन्तर अपनी रचनाओं एवं साहित्यिक अभिव्यक्तियों में हिंदी राज भाषा को प्रयोग करने के लिए सतत् प्रयास करेंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

चेतन पंडित

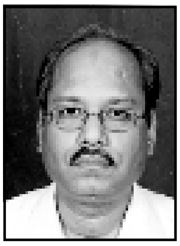

सदस्य (सिविल)
नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण
(जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार)

Member (Civil)
Narmada Control Authority
(Ministry of Water Resources, Govt.of India)

मुझे यह जानकर अपार हर्ष की 'अनुभूति' हो रही है कि नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण अपनी वार्षिक गृह पत्रिका अनुभूति के आठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

राजभाषा हिंदी सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में बांधने वाली लोकप्रिय भाषा है। केन्द्र सरकार के कार्मिक होने के नाते यह हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम अपने कार्यालयीन कार्य में इसका प्रसार करें। गृह पत्रिका का प्रकाशन इसी दिशा में एक कदम है

'अनुभूति' के इस आठवें अंक को भी प्राधिकरण के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी रचनाओं के द्वारा अपनी-अपनी अभिव्यक्तियों को सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त किया है। रचनाओं में काफी विविधता है और वे जीवन की अनुभूति को अभिव्यक्त करने में सक्षम है।

पत्रिका के इस संस्करण के प्रकाशन में संलग्न सभी सदस्य एवं इससे जुड़े सभी कर्मचारी जिनके अथक परिश्रम से यह शुभ कार्य सम्पन्न हो सका है, को मैं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ

राजभाषा की उन्नति एवं प्रगति की कामना के साथ।

(मुकेश कुमार सिन्हा)

शुभकामना सन्देश

सदस्य (विद्युत)
नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण
(जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार)

Member (Power)
Narmada Control Authority
(Ministry of Water Resources, Govt.of India)

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई हे कि नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण अपनी राजभाषा पत्रिका 'अनुभूति' का आठवाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

पत्रिका के विगत संस्करणों के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि जल संसाधन के विभिन्न पहलुओं को हिंदी भाषा के अनेक विधाओं के माध्यम से सरल शब्दों में जनमानस तक पहुँचाने का भगीरथ प्रयास सफल रहा है। पत्रिका में प्रकाशित लेख बहुत ही जानकारी देने वाले है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन के पुनीत कार्य में जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस अवसर पर बधाई देता हूँ।

'अनुभूति' के निरन्तर प्रगति की आशा एवं हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(नरेन्द्र कुमार भंडारी)

सचिव
नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण
(जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार)

Secretary
Narmada Control Authority
(Ministry of Water Resources, Govt.of India)

'अनुभूति' अपने आठवें सोपान पर है आपके सामने इसके माध्यम से प्राधिकरण की विभिन्न गतिविधियाँ-तकनीकी, सांस्कृतिक, सामाजिक आपके सामने प्रस्तुत की जा रही है। इस अवसर पर मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि आने वाले वर्ष मे अभी से 'अनूभूति' के अगले अंक के लिए अच्छी प्रकाश्य रचनाओं के लेखन के बारे में निश्चय करेंगे। 'अनुभूति' को और अधिक साहित्यिक ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए आपका यह प्रयास प्रभावी एवं आवश्यक होगा।

शुभकामनाओं सहित।

(मुकेश चौहान)

इस अंक में.....

¤ गम्भीर होती जा रही जल समस्या का निदान तीन 'ज' में	मुकेश चौहान	1
¤ केन्द्रीय कर्मचारियों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ	मुकेश चौहान	3
¤ नर्मदा कछार में वास्तविक समय आँकड़ा अर्जन प्रणाली के सुदृढ़ीकरण एवं विस्तार के लिए महत्वाकांक्षी एवं अत्याधुनिक तकनीक	चन्द्रशेखर श्रीवास्तव	7
¤ जल प्रबंधन में जन सहयोग	नरेश लाल	11
¤ अपने कार्य एवं संस्थान से करे प्रेम	देवेन्द्र सक्सेना	13
¤ नारी स्वतंत्रता या आर्थिक स्वतंत्रता	राजेश ठक्कर	14
¤ सरदार सरोवर पॉवर कॉम्प्लेक्स के नदी तल विद्युत गृह की मशीनों को चलाने के आवश्यक दिशा-निर्देश	हेमंत पाण्डेय	16
¤ खारा क्यों होता है समुद्र का पानी	संकलित-प्रवीण नीखरा	17
¤ नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण में राजभाषा कार्यों से सम्बन्धित गतिविधियाँ	ओम प्रकाश वर्मा	18
¤ इन्दौर-आज और कल	दिनेश कुमार जैन	20
¤ बिन पानी सब सून	रंजना सिंह चौहान	21
¤ हिंदी क्यों नहीं	संकलित - वैशाली सांगलीकर	23
¤ उपयोगी विचार	सुदेश पाल	24
¤ प्रशासक	हीरालाल वासवानी	25
¤ मात्र उपभोगवादी संस्कृति ही क्यों ?	पान सिंह	26
¤ भाषायी कम्प्यूटरीकरण : एकमात्र विकल्प यूनिकोड	(संकलित-राजभाषा भारती पत्रिका से)	27
¤ पर्यावरण अध्ययन	उषा द्विवेदी	28
¤ महिला विधेयक	उषा द्विवेदी	28
¤ पानी का महत्व	सैफुद्दीन हैदर अली आसिफ	28
¤ रूक जा रे ओ सांझ के बादल	संकलित -चन्द्रहास शर्मा	29
¤ भोला वोटर	राजेश सेन	30
¤ जिंदगी	आलोक जैन	30
¤ इक्कीसवीं सदी में ढूंढते रह जाओगे	अर्जुन राजपाल	31
¤ आम का पेड़	पुरुषोत्तम गजभिये	31
¤ एक हरे-भरे पेड़ की पुकार	हीरालाल वासवानी	31
¤ माँ	संकलित-अनिता पिण्डारी	32

लेख और रचनाओं में दिए गए विचार लेखकों के हैं, नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

गम्भीर होती जा रही जल समस्या का निदान तीन 'ज' में

◖ मुकेश चौहान
सचिव

भारत की आजादी के बाद देश ने कई क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की। विज्ञान और तकनीकी, औद्योगिकी, परमाणु ऊर्जा एवं मिसाइल तकनीकी में प्रगति से भी महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत ने अपने जल संसाधनों के समुचित विकास एवं हरित क्रांति की सहायता से अपने को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया। सन् 1951 में भारत की जनसंख्या 36 करोड़, सिंचित क्षेत्र 46 लाख हेक्टेयर, खाद्यान्न उत्पादन 500 लाख टन जो 1996-97 में क्रमश: 90 करोड़, 918 लाख हेक्टेयर एवं 1980 लाख टन हो गया। सतही जल का भंडारण इस अंतराल में 15.6 अरब घन मी. से बढ़कर 173 अरब घन मी. हो गया, जिससे यह सिद्ध होता है कि सिंचाई के लिए जल के भंडारण में हुई उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी (विशेषकर तीसरी एवं पाँचवी पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान), हमारे खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता के लिए एक अति महत्वपूर्ण कारक थी।

हमें शायद और बाँध बनाने तथा सतही जल के भंडारण की आवश्यकता न पड़ती अगर हमारी खाद्यान्न पेयजल और अन्य कृषि आधारित उद्योगों को कच्चे माल की आवश्यकता स्थिर रहती, पर क्या हम अपनी आवश्यकताएँ स्थिर रख पा रहे हैं। हमारी जनसंख्या जो 1951 में 36 करोड़ थी, सन् 2000 में 100 करोड़, सन् 2025 में 150 करोड़ और सन् 2050 में 164 करोड़ होने की आशंका है। देश में खाद्यान्न की प्रति औसत खपत विकसित राज्यों से बहुत कम है। अगर खाद्यान्न की प्रति व्यक्ति खपत वर्तमान की 550 ग्राम से 750 ग्राम बढ़ जाती है, तब भी हमें सन् 2050 में 45 करोड़ टन (वर्तमान के 19 करोड़ टन से लगभग ढ़ाई गुना ज्यादा) खाद्यान्न की जरूरत पड़ने वाली है। इसे या तो खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाकर या फिर इसका आयात करके पूरा करना पड़ेगा। शहरीकरण एवं गाँवों से शहरों की ओर ग्रामीणों के पलायन की समस्याओं के कारण सन् 2050 में हमारी 55 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रह रही होगी। खाद्यान्न उत्पादन के लिए जल की आवश्यकता के अलावा शहरों में पेयजल पूर्ति, उद्योगों की जल की आवश्यकता, पर्यावरणीय दृष्टि से प्रदूषण को रोकना, नदियों में न्यूनतम जल का प्रवाह बनाए रखना, पन बिजली का पूर्ण दोहन इत्यादि कई मुद्दे जल संसाधनों के विकास से जुड़े है।

भारत में संसार की 1.5 प्रतिशत भूमि, 4 प्रतिशत जल संसाधन एवं 15 प्रतिशत जनसंख्या है। प्रति व्यक्ति भूमि 0.2 हेक्टेयर है और प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता 1100 घन मीटर है जो सन् 2050 में गिरकर 685 घन मीटर हो जाएगी। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार 1000 घन मीटर प्रति व्यक्ति से कम जल की उपलब्धता वाले क्षेत्र जल के अभाव वाले क्षेत्र माने जाते हैं। इस तरह सम्पूर्ण भारत ब्रह्मपुत्र थाले को छोड़कर जल के अभाव से ग्रस्त क्षेत्र होगा। भारत में 12 प्रमुख नदी थाले है। सतही जल की कुल उपलब्धता 1869 अरब घन मीटर अनुमानित है, जिसमें 690 अरब घन मीटर ही परिस्थितिजनक कारणों से उपयोग में लाया जा सकता है। भूजल संसाधन देश में 432 अरब घन मीटर है। कुल उपयोग उपलब्ध जल (सतही एवं भूजल मिलाकर) 1122 अरब घन मीटर है। जैसा कि बताया जा चुका है कि सतही जल का भंडारण आज 173 अरब घन मीटर हो गया है। इसके अतिरिक्त जो परियोजनाएँ निर्माणाधीन है, उनमें 75 अरब घन मीटर एवं प्रस्तावित योजनााओं में 132 अरब घन मीटर का जल भंडारण संभव होगा। कुल भंडारण इन योजनाओं से 380 अरब घन मीटर होगा।

देश में कृषि योग्य भूमि 1840 लाख हेक्टेयर है, जिसमें अब और बढ़ोत्तरी की संभावना नहीं है, बल्कि ऐसा अनुमान है कि शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की पूर्ति हेतु आगामी दशक में करीब 60 लाख हेक्टेयर कृषि भूमि चली जाएगी। दूसरे नवधनाढ़्य बहुत सारी कृषि भूमि खरीदकर पड़ती भूमि के रूप में रखे रहेंगे। उसर तथा अकृषि भूमि के विकास में लगाने के लिए वित्त जुटाना संभव नहीं होगा अत: उपलब्ध कृषि योग्य भूमि में ही उचित जल प्रबंधन कर सिंचित भूमि बढ़ानी होगी। सिंचन के लिए हमें जल के अतिरिक्त भंडारण की आवश्यकता होगी। सारे ही बड़े बाँध हमें समय पर पूरे करने होंगे, नहर प्रणालियों का निर्माण पूर्ण वैज्ञानिक तरीके से करना

होगा। अतिरिक्त जल वाले क्षेत्रों एवं कमी वाले क्षेत्रों में अंतर, थाला अंतरण के द्वारा जल को ले जाने की योजनाओं का निर्माण करने के लिए पर्याप्त धन की व्यवस्था करनी होगी। अंतर्राष्ट्रीय नदियों के विवाद को सभी पक्षों को सुलझाना होगा, ताकि इन नदियों का दोहन मानव की भलाई के लिए हो सके।

सन् 2050 में सिंचाई के कुल संभाव्य क्षेत्र 1500-1600 लाख हेक्टेयर के लिए 1060 अरब घन मीटर भूजल की आवश्यकता होगी, जिसे 360 अरब घन मीटर भूजल से तथा करीब 700 घन मीटर सतही जल का भंडारण वर्तमान में 174 अरब घन मीटर है तथा निर्माणाधीन भंडारण एवं प्रस्तावित भंडारण जुटा पाना एवं चल रही तथा प्रस्तावित परियोजनाओं को पूरा कर पाना बहुत ही कठिन होगा। तीन मुख्य समस्याऐं हमारे सामने आएँगी। (1) बाँध के लिए उपयुक्त स्थलों का अभाव या उनका विवादों में पड़ा होना। (2) वित्त का प्रबंध एवं (3) लाखों लोगों के पुनर्वास की समस्या।

बाँध के लिए उपयुक्त स्थल बचे नहीं हैं या अव्यावहारिक हैं शायद अधिकतर स्थल हिमालय में हैं और पर्यावरण की दृष्टि से उनका निर्माण उचित न होगा। उपरोक्त अतिरिक्त भंडारण के लिए हमें करीब 7000 अरब रूपयों की आज के मूल्य पर आवश्यकता होगी। सिंचाई परियोजनाओं में निवेश से हमें प्रतिलाभ भी भरपूर होता है, जिससे इन पर अतिरिक्त वित्तीय निवेश करने की व्यवहार्यता स्वयं सिद्ध है। तीसरी कठिन समस्या इन परियोजनाओं से होने वाले लाखों लोगों के पुनर्वास की होगी, जो इस तथ्य के मद्देनजर कि अधिकतर जनसंख्या नदियों के किनारे ही बसती है बहुत ही दुष्कर होगी।

दो विकल्प ऊपर बताई जल अभाव की समस्या के निदान के रूप में सामने आते हैं। पहला विकल्प जल संरक्षण का है। शहरों में पेयजल प्रबंध कर वहाँ के उपयोग के लिए पानी का पुन: उपयोग ड्रेनेज एवं जल उपचार का प्रबंध कर सुनिश्चत करना होगा। सिंचाई जल से अधिकतम लाभ देने के लिए जल का दुरूपयोग रोकना होगा तथा टपक एवं छिड़काव (ड्रिप एवं स्प्रिंकलर) सिंचाई प्रणालियों का जनसाधारण तक पहुँचाना होगा। कम जल का उपयोग करने वाली खेती (ड्रायलैंड फार्मिंग) उन इलाकों में करनी होगी, जहां सिंचाई के साधन उपलब्ध नहीं करवाए जा सकते। खेती के लिए महत्वपूर्ण कारक तथा विपणन, बीज, खाद, कृषि उपकरण, कीटनाशक, वित्त, सहकारिता के आधार पर छोटे एवं सीमांत किसानों को उपलब्ध करवाने होंगे। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में जंगल एवं फल देने वाले वृक्षों को रोपण करना होगा। भूमि सुधार कर भूमि की उपजाऊ शक्ति के ह्रास को रोकना होगा। भूक्षरण की तरफ विशेष ध्यान देना होगा।

दूसरा विकल्प हमारी जनसंख्या एवं आवश्यकता को कम रखने का ही हो सकता है। 21वीं शताब्दी में हर नया वर्ष एक नाभिकीय बम के विस्फोट से ज्यादा खतरनाक होगा। अगर हम जनसंख्या वृद्धि दर आने वाले 25 वर्षों में इस तरह से कम कर सकें कि भारत की जनसंख्या 125 करोड़ पर स्थिर हो जाए, तब हमें ज्यादा बड़े बाँधों की जरूरत नहीं होगी और हम खाद्यान्न में आत्मनिर्भर रहेंगे अन्यथा या तो करोड़ों लोग भुखमरी के शिकार होंगे या हमे सारी विदेशी मुद्रा खाद्यान्न आयात में खर्च करना होगा।

अत: मूल समस्या जनसंख्या वृद्धि की है एवं नए जलाशयों का निर्माण, लाखों लोगों का विस्थापन, वित्त की व्यवस्था, जल प्रदूषण, भूमि का क्षरण एवं इस पर बढ़ता बोझ, जल के बँटवारे का झगड़ा इत्यादि जनसंख्या वृद्धि से जुड़ी हुई समस्याएँ हैं।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए इक्कीसवीं शताब्दी में तीन 'ज' पर ध्यान देना—जनजागृति, जल संरक्षण एवं जनसंख्या स्थिरीकरण। इनसे ही हमारी जल-समस्या का दीर्घकालीन हल हो सकता है। इसमें जल समस्याओं राजनीतिज्ञों, जनता व समस्त नीति - निर्माताओं को मिलजुलकर कार्य करना होगा।

हमनें अपने संविधान में हिंदी का राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है। इसलिए हमें देखना है कि सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हो।

- पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी

केन्द्रीय कर्मचारियों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ

मुकेश चौहान
सचिव

भारत सरकार एक आदर्श नियोक्ता के रूप में अपने कर्मचारियों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएँ चला रही है। कर्मचारी अपने सेवाकाल एवं सेवानिवृत्ति के पश्चात् समयानुसार इन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाते हैं। विस्तृत रूप से इनके बारे में सरकारी कार्य आदेशों में तथा स्वामी प्रकाशन की पुस्तको में दिया गया है पर संक्षिप्त रूप से यह योजनाऐं नीचें दी गई है :-

1) चिकित्सा सुविधा :-

इसके तहत केन्द्र शासन के द्वारा नियुक्त आथोराइज्ड मेडिकल अटेन्डेंट (ए.एम.ए.) के माध्यम से बाहच्च चिकित्सा उपचार प्राप्त किया जा सकता है। जहाँ शासकीय डॉक्टर्स की कमी हो, ऐसे क्षेत्रों में निजी चिकित्सकों को सरकार/केंद्रीय कर्मचारी कल्याण समन्वय समिति द्वारा नियुक्ति दी जाती है। ए.एम.ए. कर्मचारी या उनके परिवार के सदस्य को किसी चिकित्सा विशेषज्ञ के पास भी परामर्श के लिए भेज सकते हैं। जबकि ग्रुप -क- के अधिकारी चिकित्सा विशेषज्ञ से सीधे ही परामर्श कर सकते हैं। ओ.पी.डी. के तहत चिकित्सा भुगतान प्राप्त करने पर केंद्र सरकार में कोई ऊपरी सीमा नहीं है पर विभाग प्रमुख अपने विवेक से किन्हीं-किन्हीं प्रकरणों में जाँच करवा कर यह सुनिश्चित कर सकता है कि इस सुविधा का दुरूपयोग ना हो। ए.एम.ए के द्वारा इलाज हेतु सरकारी या सरकारी मान्यता प्राप्त अस्पतालों मे भी भेजा जा सकता है।

जिन नगरों में केंद्रीय सरकारी स्वास्थ्य सुविधा की योजना है वहाँ सी.जी.एच.एस. शहरों में सेवारत कर्मचारी जैसी ही चिकित्सा सुविधाएँ मिलती है पर अन्य शहरों में प्रति पेंशनर परिवार रु. 100/- प्रतिमाह चिकित्सा भत्ता दिया जाता है।

2) विभिन्न प्रकार के अग्रिम :-

शासकीय कर्मचारी को अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु विभिन्न प्रकार के अग्रिम दिए जाते है, कुछ बिना ब्याज होते हैं, कुछ पर ब्याज देय है। विवरण इस प्रकार है --

(अ) ब्याज रहित अग्रिम

(1) स्थानांतरण पर वेतन अग्रिम

(2) प्रवास, स्थानांतरण, सेवा निवृत्ति पर यात्रा अग्रिम

(3) मृत शासकीय सेवक के परिवार को यात्रा भत्ता अग्रिम

(4) अवकाश यात्रा रियायत पर यात्रा भत्ता अग्रिम

(5) अवकाश वेतन अग्रिम

(6) बीमार होने पर इलाज हेतु अग्रिम

(7) त्यौहार अग्रिम

(8) प्राकृतिक विपदा जैसे बाढ,अग्नि, सूखा, बवंडर पर अग्रिम

(9) प्रथम नियुक्ति, प्रतिनियुक्ति और विदेश में पद स्थापना हेतु अग्रिम

(10) कर्मचारी के विरूद्ध न्यायालय कार्यवाही पर बचाव हेतु अग्रिम

(11) पत्राचार पाठ्यक्रम से हिन्दी सीखने हेतु अग्रिम

(12) साईकिल क्रय हेतु अग्रिम

(13) गर्म कपड़े खरीदने हेतु अग्रिम

(ब) ब्याज सहित अग्रिम

(1) डाक तथा रेलवे मेल सर्विस के इन्सपेक्टरों को टाइप राइटर क्रय करने हेतु अग्रिम

(2) वाहन-मोटर कार, मोटर सायकल, स्कूटर, मोपेड क्रय करने हेतु अग्रिम

(3) कम्प्यूटर क्रय हेतु अग्रिम

(4) भवन,प्लाट क्रय करने या पुराने भवन की दुरूस्ती कराने हेतु अग्रिम

(3) सामान्य भविष्य निधि

केंद्रीय सेवा भविष्य निधि नियम के अनुसार समस्त स्थायी, अस्थायी शासकीय सेवक , पुनर्नियुक्त पेंशनर जिनकी सेवा एक वर्ष पूर्ण हो चुकी होगी, उन्हें सामान्य भविष्य निधि में अनिवार्य योगदान देना होगा। इसकी सुविधा 01.01.2004 से पूर्व नियुक्त कर्मचारी के लिए ही है। अंशदान कुल परिलब्धि का 6 प्रतिशत न्यूनतम अंशदान पूर्ण रुपयों में करना होता है जो प्रतिवर्ष 31 मार्च को मिल रही परिलब्धि के आधार पर निर्धारित किया जाता है। वर्ष में दो बार वृद्धि की जा सकती है और एक बार अंशदान कम किया जा सकता है। इसके लिए परिवार के किसी सदस्य की या ज्यादा सदस्यों का नामाकन उनको दिए जाने वाले हिस्सों सहित करना आवश्यक है। अंशदाता का खाता रखा जाता है और उसे खाता नंबर दिया जाता है। इसकी ब्याज दर प्रतिवर्ष घोषित की जाती है और प्रतिवर्ष मार्च के अंत में ब्याज जोड़ा जाता है।

भविष्य निधि से विभिन्न कारणों से अग्रिम प्राप्त किया जा सकता है, यह कारण इस प्रकार है 1. चिकित्सा व्यय 2. शिक्षा के लिए 3. पारिवारिक संस्कारों के लिए 4. कानूनी रक्षा के लिए 5. घरेलू सामान के क्रय हेतु 6. मकान निर्माण/प्लाट खरीदने हेतु 7. मोटर वाहन या कम्प्यूटर क्रय करने हेतु जमा राशि का 90 प्रतिशत तक पूर्ण सेवाकाल में केवल एक बार वे कर्मचारी निकाल सकते हैं जिनकी सेवनिवृत्ति आगामी एक वर्ष के भीतर होने वाली है।

भविष्यनिधि का अंतिम भुगतान कर्मचारी की सेवानिवृत्ति पर उसके द्वारा त्यागपत्र देने पर (2) उसकी सेवा समाप्त होने पर (3) सेवा निवृत्ति पूर्ण अवकाश पर जाने पर होता है।

(4) अंशदायी भविष्य निधि

यह योजना उन कर्मचारियों के लिए है जिन्हें पेंशन प्राप्त नहीं होती है और जो 31.12.2003 से पूर्व नियुक्त हुए है। इसमें न्यूनतम परिलब्धि का 10 प्रतिशत या पूरी परिलब्धि तक राशि अंशदाता के निवेदन पर जमा कराई जा सकती है। शासन का योगदान परिलब्धि का 10 प्रतिशत होता है।

(5) कल्याणकारी योजनाएँ : बीमा तथा बचत योजना

1) स्वरूप: केंद्रीय शासन के कर्मचारियों के लिए समूह बीमा योजना 1980,समस्त केंद्र शासन के कर्मचारियों के लिए आवश्यक है इस योजना में दिनांक 01.10.1997 से केंद्रीय कर्मचामरी भी, जिन्हें केंद्र शासन का कर्मचारी माना है, सम्मिलित किए गए हैं। इस योजना में कम मूल्य पर दो लाभ,यथा : बीमे का लाभ (मृत्यु होने पर परिवार को सहायता) तथा सेवानिवृति होने पर एक मुश्त भुगतान का प्रावधान है।

2) बीमा एवं बचत :

कर्मचारी द्वारा जमा राशि का 30 प्रतिशत बीमा में तथा 70 प्रतिशत धन 01.01.1988 से बचत खाते में जमा होता है जिस पर निर्धारित दर से चक्रवृद्धि ब्याज दिया जाता है।

(6) कर्मचारी के सेवा में रहते मृत्यु होने पर सहायता :

(1) तत्काल सहायतास्वरूप यदि कोई कर्मचारी (राजपत्रित या अराजपत्रित) की मृत्यु सेवा में रहते हो जाती है तो उसके परिवार को तीन माह का वेतन या रु. 8000/- जो भी कम हो अग्रिम के रूप में तत्काल दिया जाता है।

(2) **भुगतान**

यह सहायता कार्यालय प्रमुख या वह राजपत्रित अधिकारी, जिसके मातहत वह कर्मचारी कार्यरत है, स्वीकृत कर सकता है तथा उसका भुगतान बैंक से पैसा निकलवाकर या इम्प्रेस्ट से, या अन्य स्रोत से किया जा सकता है। यह राशि उस व्यक्ति को जो मृत्यु उपदान पाने का पात्र है, को दी जावेगी।

(7) कर्मचारी की मृत्यु होने पर परिवार के एक सदस्य को नौकरी में नियुक्त करना (अनुकम्पा नियुक्ति) :

शासकीय कर्मचारी की सेवा में रहते मृत्यु होने पर उसके परिवार के एक सदस्य अर्थात् पत्नी /पुत्र/पुत्री (गोद लिये बच्चे सहित) को नियुक्ति नियमों को शिथिल करते हुए (ग्रुप 'सी' एवं ग्रुप 'डी' के पद पर जिसके वो योग्य हो) जिसमें पोस्ट एवं टेलिफोन विभाग के तकनीकी पद सम्मिलित है, नियुक्ति दी जा सकती है।

(8) बच्चों की शिक्षा पर भत्ता :

यह व्यय सभी केंद्रीय शासकीय सेवकों को बिना वेतन सीमा के देय है। यह व्यय राज्य सरकार के कर्मचारी जो केंद्र में है, को भी देय है। वे

कर्मचारी जो राज्यों में प्रतिनियुक्ति पर होंगे या विदेश सेवा में हों को भी देय है यदि उनके प्रतिनियुक्ति की शर्तों में इसको प्रावधान हो।

(9) बच्चों को शैक्षणिक भत्ता :

(1) जब शासकीय सेवक की पदस्थापना ऐसे स्थान पर हो जहाँ मानक स्कूल न हो तथा उसको बच्चों को पढ़ने दूर भेजना पड़े या शासकीय सेवक को बच्चों की पढ़ाई की दृष्टि से अपने मुख्यालय से दूर रखना पड़े।

(2) जब सबसे पास का मानक स्कूल ऐसे स्थान पर हो जहाँ स्कूल समय पर पहुँचने में या छुट्टी के पश्चात् घर आने के लिए सुविधाजनक बस या ट्रेन न हो तथा ट्रेन या बस की यात्रा में एक घंटे से अधिक का समय लगे।

(3) यदि कर्मचारी की पदस्थापना के स्थान पर मानक स्कूल में बच्चे को स्थानाभाव या अन्य कारण से प्रवेश न मिले, तो उस स्थान पर मानक स्कूल का अभाव माना जावेगा।

स्थानांतरण होने पर : यदि शासकीय सेवक का स्थानांतरण ऐसे स्थान में जहाँ स्कूल नहीं था, से ऐसे स्थान पर हो जावे जहाँ मानक स्कूल की सुविधा उपलब्ध हो तथा वह अपने बच्चों को पूर्व स्कूल से न हटावे तो वह शैक्षणिक सत्र की समाप्ति तक भत्ता प्राप्त कर सकता है।

बच्चों के शैक्षाणिक भत्ते की दर के अनुसार नर्सरी प्रायमरी, सेकेंडरी और हायर सेकेंडरी कक्षा के बच्चों के लिए प्रति बालक रू. 1000/- तक देय है।

(10) ट्यूशन फीस की प्रतिपूर्ति : यह उन बच्चों को देय नहीं है जिन्हें शैक्षाणिक भत्ता मिलता है। ट्यूशन फीस का भुगतान निम्न दर से होता है –

कक्षा	अधिकतम देय ट्यूशन फीस
नर्सरी से 12वीं तक	अधिकतम 1000/- प्रतिमाह

विकलांग / मानसिक दुर्बल बच्चों के लिए कक्षा नर्सरीं से 12वीं तक रू. 2000/- प्रतिमाह है।

(3) छात्रावास में रहने की सुविधा :

यदि शासकीय सेवक को स्थानांतरण के कारण अपने बच्चों को मुख्यालय से विद्यालय दूर होने के कारण पढ़ाई के लिए रेसिडेंशियल स्कूल के छात्रावास में रखना पड़े और बच्चा छात्रावास में प्रवेश पा ले तो कर्मचारी के स्थानांतरण के दिनांक से छात्रावास भत्ता देय होगा।

दर: यह भत्ता अधिकतम रू. 3000/- प्रति बालक के हिसाब से देय होगा तथा ट्यूशन फीस का भुगतान अलग से नहीं किया जावेगा।

(12) पेंशन :

सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण कल्याणकारी योजना उन्हें मासिक पेंशन की है जो उसे सेवानिवृत्त पर 15 वर्ष पश्चात् या कम से कम 20 वर्ष की सेवा के पश्चात् स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति पर अंतिम वेतन का 50 प्रतिशत होती है। सेवानिवृत्ति की आयु सीमा केंद्र में 60 वर्ष है। पेंशन का 40 प्रतिशत तक कम्यूट कर वह सेवानिवृत्ति पर एक मुश्त राशि भी प्राप्त कर सकता है। इस पर सेवारत कर्मचारी की भांति उसे मंहगाई भत्ता भी दिया जाता है। 15 वर्ष के पश्चात् उसे कम्यूटीड पेंशन की राशि उसकी पेंशन में दोबारा जोड़ दी जाती है। 01.01.2004 के पश्चात् नियुक्त कर्मचारी उक्त पेंशन के पात्र नहीं है।

(13) उपदान (ग्रेज्युटी)

1. सेवा उपदान :- यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु 10 वर्ष की शासकीय सेवा पूर्ण किए बिना हो जाती है तो उसे पेंशन की पात्रता नहीं होती है बल्कि उसको एक मुश्त राशि, जिसे सेवा उपदान कहा जाता है, दी जाती है। यह राशि प्रत्येक छः माही पर उसके आधे माह की उपलब्धि दर के अनुसार दी जाती है। उपलब्धि में मूलवेतन, गतिरोध वेतन वृद्धि तथा प्रेक्टिस न करने का भत्ता सम्मिलित होता है तथा उसमें सेवा निवृत्ति/मृत्यु की दिनांक को देय मंहगाई भत्ता जोड़ा जाता है। यह उपदान सेवा-निवृत्त उपदान के अतिरिक्त है, जो नियम 49(1) के अंतर्गत 5 वर्ष की अर्हतादायी सेवा पूर्ण करने पर देय होता है।

(2) सेवानिवृत्ति उपदान : यह उन शासकीय कर्मचारियों को देय है जो कम से कम 15 वर्ष की अहर्तादायी सेवा पूर्ण कर सेवानिवृत्त होते है। यह सेवा की प्रति छमाही पर उपलब्धि का 1/4 की दर से देय होता है। यह अधिकतम उपलब्धि की 6 गुनी तक दी जाती है। उपदान अधिकतम 3.50 लाख रूपये तक देय है। यह

अस्थाई कर्मचारी को जो कम से कम 10 वर्ष की अहर्तादायी सेवा पूर्ण कर सेवानिवृत्त हुए है या जो 20 वर्ष सेवा कर स्वेच्छिक सेवा निवृत्त होते है, उनको भी देय है।

(14) अवकाश का नगदीकरण :

अवकाश स्वीकृत करने वाले अधिकारी को कर्मचारी के सेवानिवृत्त होने पर उसकी सेवा निवृत्ति के दिन अवशेष अर्जित अवकाश के दिनों के वेतन के बराबर राशि के भुगतान की स्वीकृति देनी चाहिए। यह अधिकतम 300 दिनों तक हो सकती है। जिसमें कर्मचारी ने अवकाश यात्रा सुविधा के समय उसे जितने दिनों का भुगतान प्राप्त कर लिया होगा वह घटाया जाएगा।

यह निम्न परिस्थितियों में देय है :-

(1) अधिवार्षिकी आयु प्राप्त कर सेवा निवृत्ति

(2) यदि अधिवार्षिकी आयु पूर्ण होने पर सेवा वृद्धि स्वीकृत हो तो वह अवधि समाप्त होने पर

(3) यदि कर्मचारी निलम्बित स्थिति में सेवानिवृत्त होता है और उसके विरूद्ध विभागीय या न्यायालयीन कार्यवाही चल रही हो, तब कार्यवाही पूर्ण होने पर यदि कोई शासकीय राशि देय हो तो उसके समायोजन के पश्चात्

(4) कर्मचारी को तीन माह का नोटिस देकर सेवा समाप्ति पर या उसकी नियुक्ति की शर्तों के अनुसार

(5) जब किसी कर्मचारी को चिकित्सीय आधार पर अयोग्य करार दिया जाकर सेवानिवृत्त किया गया हो।

(6) जब कर्मचारी स्वयं त्याग पत्र दें तब उसे अवशेष अर्जित अवकाश के आधे दिनों का ही वेतन दिया जाएगा जो अधिकतम 150 दिन हो सकता है।

(7) मूल नियम 56 (1) या (2) के अंतर्गत अवधि पूर्व सेवानिवृत्ति

(8) स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति (मूल नियम 56 के अनुसार)

(9) जब दण्डस्वरूप अनिवार्य सेवा निवृत्त किया जावे लेकिन पेंशन में कभी न जाए।

अर्द्ध वेतन अवकाश का नगदीकरण

ऊपर 1,7,8, के अंतर्गत स्थाई / अर्ध स्थायी कर्मचारी तथा अयोग्य घोषित कर्मचारियों को अर्जित अवकाश के अतिरिक्त यदि अर्ध वेतन अवकाश भी बकाया होगा तो उसके वेतन के बराबर की राशि देय है। लेकिन दोनों अवकाशों की अवधि अधिवार्षिकी से आगे नहीं जानी चाहिए। परंतु यह प्रतिबंध अधिवार्षिकी पर सेवा निवृत्ति होने वाले कर्मचारियों पर लागू नहीं हैं।

चिन्ता नहीं होगी अगर जिंदगी जियोगे ऐसे ......

चिंताएँ अपार होती हैं। घर-परिवार और बच्चों की चिंता, अपनी और अपने से जुड़े लोगों के भविष्य की चिंता, समाज में अपनी प्रतिष्ठा और पहचान की चिंता, सुखद खुशहाल जीवन के लिए आमदनी बढ़ाने की चिंता, रोग की चिंता आदि कई चिंताएँ हमें सतत् सताती रहती हैं। इन चिंतां को दूर हटाकर सभी के नए संकल्प, नए स्वप्न, नई कामनाएँ पूर्ण हों और सफल भी, इसके लिए बस आवश्यकता हैं हमें अपने आप से कुछ वादे करने की। तो आइए हम पूर्ण तन्मयता व एकाग्रता के साथ वादे करें और उन्हें कार्यान्वित भी करें। इसके लिए प्रस्तुत हैं कुछ नुस्खे -

⋆ वजन कम करना ⋆ व्यायाम अधिक करना ⋆ संघटित होना, घर में व कार्य स्थल पर धैर्य-संतोष ⋆ बजट का सीमा में रहना ⋆ अल्प बचत ⋆ जीवन सादा रखे ⋆ बीमारी की चिंता नहीं करें ⋆ अपना कार्य रुचि व लगन से करना ⋆ मनोरंजन का कोई साधन होना चाहिए ⋆ जीवन में संतुष्ट रहें ⋆ किसी से नफरत न करें ⋆ छोटी-छोटी बात पर चिढ़ें नहीं ⋆ मधुर बोलें ⋆ प्रतिदिन हँसकर उठे, प्रभु स्मरण करें

.... देखिए, सारा दिन प्रसन्नतापूर्वक बीत जाता है।

जब तक अपने करणीय के प्रति सजग नहीं बनोगे, कुछ नहीं कर सकोगे

नर्मदा कछार में वास्तविक समय आँकड़ा अर्जन प्रणाली के सुदृढ़ीकरण एवं विस्तार के लिए महत्वाकांक्षी एवं अत्याधुनिक तकनीक

चन्द्रशेखर श्रीवास्तव
मुख्य अभियंता

प्रस्तावना

नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण पंचाट (NWDT Award) के अन्तर्गत उल्लेखित दायित्वों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण (N.C.A.) के द्वारा सम्बन्धित भागीदार राज्य सरकारों के सक्रिय सहयोग से नर्मदा नदी कछार में जल प्रवाह का पूर्वानुमान, रीवर माडलिंग और इनसे जुड़े विभिन्न कार्यो जैसे जलाशय के अंतर्प्रवाह (Inflow) का पूर्वानुमान एवं वार्षिक जललेखा प्रणाली को विकसित किए जाने से सम्बन्धित प्रणाली (Network) स्थापित किया जाना है। उपरोक्त कार्य पूर्ण होने के पश्चात नर्मदा नदी कछार के मुख्य परियोजनाओं जैसे सरदार सरोवर परियोजना एवं इंदिरा सागर परियोजना का परिचालन इस प्रकार से किया जा सकना सम्भव नहीं होगा कि नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण पंचाट में उल्लेखित प्रावधानों की अनुपालना करते हुए सम्बन्धित राज्य सरकारों को इससे अधिकतम लाभ प्राप्त हो।

साथ ही उपरोक्त प्रणाली के द्वारा नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण पंचाट के दिशा-निर्देशों के अनुरूप सम्बन्धित पक्षकार राज्यों के द्वारा उपयोग हेतु उपलब्ध जल का आंकलन करते हुए उनके हिस्से के उपयोगी जल की मात्रा के सम्बन्ध में निर्णय लिया जा सकेगा।

2. प्रणाली (Network) के उद्देश्य

क) इंदिरा सागर परियोजना एवं सरदार सरोवर परियोजना हेतु 6 से 12 घण्टे के अग्रिम समय एवं $\pm$ 20 प्रतिशत की परिशुद्धता के साथ अन्तर्प्रवाह की मात्रा का पूर्वानुमान, जो कि इन जलाशयों के परिचालन के लिए एक महत्वपूर्ण जानकारी होगी।

ख) सभी भागीदार राज्य सरकारों को नेटवर्क के अन्तर्गत विभिन्न सुदूर स्थलों से वर्षा, जल स्तर एवं जलाशयों से छोड़े गए जल से सम्बन्धित आँकड़े एवं जानकारी प्रदान करना।

3. वर्तमान वास्तविक समय आंकड़ा अर्जन प्रणाली (RTDAS Network) :

नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण के द्वारा संचालित वर्तमान प्रणाली के अन्तर्गत 26 सुदूर स्थल हैं जो कि विभिन्न जलमौसम विज्ञानीय पैरामीटरों के लिए द्विमार्गीय टेलीमेट्री प्रणाली पर आधारित हैं। प्रत्येक सुदूर स्थल पर इन्सेट डाटा कलेक्शन प्लेटफार्म (DCP) स्थापित हैं जो कि उक्त स्थल के जलमौसम विज्ञानीय आँकड़े विभिन्न सेन्सर के द्वारा लेने की क्षमता से युक्त है। सुदूर स्थल तीन श्रेणी के हैं : परियोजना स्थल, (PS) गेज एवं प्रवाह स्थल (GDS) एवं मौसम सम्बन्धी स्थल (MS)। इन स्थलों पर मुख्यतः वर्षा सम्बन्धी आँकड़े, जलाशय/नदी के जल स्तर के आँकड़े, तापमान एवं आपेक्षित आर्द्रता इत्यादि पैरामीटर हेतु यंत्र (Sensor) स्थापित किए गए हैं। इन्दौर में स्थित मुख्य नियंत्रण केन्द्र (MCC) इन सुदूर स्थलों से उपरोक्त यंत्रों के द्वारा परिमापित किए गए जलमौसम विज्ञानीय आँकड़ों को वास्तविक समय के आधार पर हर 15 मिनट में इकट्ठा करता है।

वर्तमान प्रणाली को अगले पृष्ठ पर दर्शाया जा रहा है एवं इसमें उपयुक्त विभिन्न उपकरणों की कार्यप्रणाली संक्षिप्त में दी जा रही है -

Block Diagram of Communication System for Remote Station	Block Diagram of Communication System for MCC
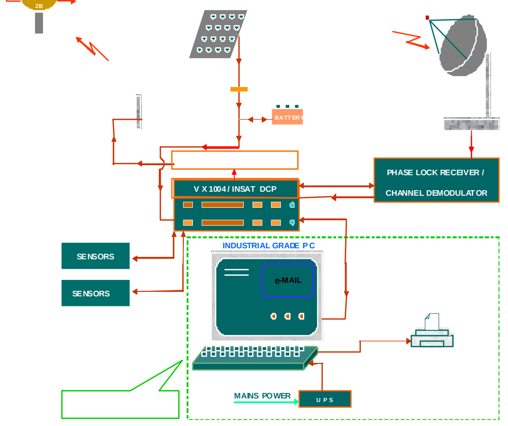	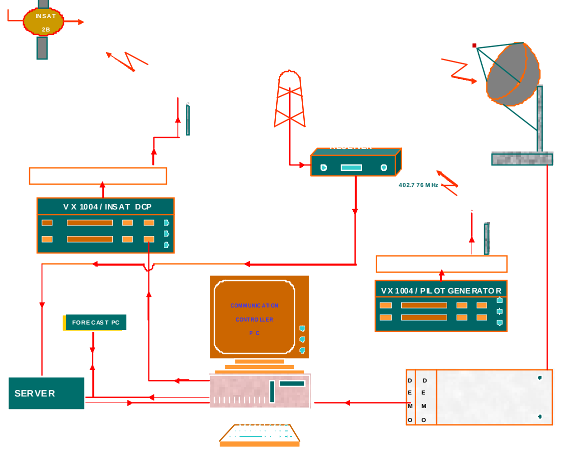
सुदूरवर्ती स्थलों से आँकड़े भेजने एवं निर्देश प्राप्त करने की प्रक्रिया/प्रणाली	सुदूरवर्ती स्थलों को एवं उनके द्वारा भेजे गए आँकड़ों को मुख्य नियंत्रण केन्द्र पर प्राप्त करने की प्रक्रिया/प्रणाली

सुदूर स्थल के उपकरणों का ब्यौरा

सेन्सर :-	ये उपकरण जलमौसम विज्ञानीय आँकड़े एकत्रित करके डाटालॉगर (DCP) को भेजते हैं।
इनसेट डी.सी.पी. :-	यह विभिन्न सेन्सर द्वारा भेजे गए आँकड़ों को एकत्रित करके रखता है। इसके दो पावर स्रोत है। बैटरी एवं मुख्य विद्युत स्रोत। (AC Mains)
सोलर पैनल :-	मुख्य बिजली विद्युत स्रोत के अभाव में बैटरी को चार्ज करने का कार्य करता है।
डिश एन्टिना :-	इसके द्वारा मुख्य नियंत्रण कक्ष से भेजे गये कमाण्ड सिग्नल को ग्रहण किया जाता है।
हेलिक्स एन्टिना :-	ये सुदूर स्थल के जलमौसम विज्ञानीय आँकड़े उपग्रह के द्वारा मुख्य नियंत्रण केन्द्र को भेजते हैं।
कम्प्यूटर :-	इसके माध्यम से डाटा लॉगर, में एकत्रित आँकड़ों को देख सकते हैं तथा मुख्य नियंत्रण केन्द्र में संदेश भी भेज सकते हैं।

मुख्य नियंत्रण केन्द्र, इन्दौर में एक कन्ट्रोलर कम्प्यूटर (Communication PC) सहित एक कमाण्ड ट्रांसमीटर तथा पूर्णतया 'इनसेट' क्षमता से युक्त डेटा रीडआउट ग्राउन्ड स्टेशन है, जिससे किसी भी विशिष्ट सुदूर स्थल को मुख्य नियंत्रण केन्द्र से संदेश भेजे जा सकते हैं और उस स्टेशन से विभिन्न आँकड़े (जैसे वर्षा, जलस्तर इत्यादि) प्राप्त किए जा सकते हैं, जिनका उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है। सुदूर स्थल को 'सिस्टम आइडेन्टीफिकेशन नम्बर' (ID) के साथ निर्देश प्रेषित किए जाते हैं। उक्त सुदूर स्थल के द्वारा सभी पैरामीटरों के आँकड़े प्रेषित किए जाते हैं। जिनका भंडारण मुख्य नियंत्रण केन्द्र में स्थापित सर्वर कम्प्यूटर में होता है। इस प्रकार जिस सिस्टम आइडेन्टीफिकेशन नम्बर वाले रिमोट स्टेशन को कमाण्ड भेजा गया है, मुख्य नियंत्रण केन्द्र में रखे उसी सुदूर स्थल का कन्ट्रोल सॉफ्टवेयर कार्यशील हो जाता है एवं संदेशों तथा आँकड़ों का आदान-प्रदान मास्टर कन्ट्रोल सेन्टर एवं सुदूर स्थल के बीच लगातार बना रहता है। उपग्रह कल्पना-1 के द्वारा आँकड़े भेजने हेतु सभी सुदूर स्थलों पर डिश एन्टिना स्थापित किए गए हैं, जिससे संदेश भेजने एवं आँकड़े ग्रहण करने का कार्य किया जाता है। इसमें लगे विभिन्न उपकरण अन्तरिक्ष में व्यापक रूप से फैले भ्रामक सिग्नलों एवं टी.वी. सिग्नलों से होने वाली बाधा से नेटवर्क को बचाते हैं।

उपग्रह कल्पना-1 के अपने कक्ष से धीरे-धीरे सरकने (Drifting) के कारण कमजोर एवं बाधित सिग्नल मिल रहे हैं। साथ ही वर्तमान प्रणाली में उपयुक्त विभिन्न सेन्सर एवं कम्यूनिकेशन उपकरण पिछले कई सालों से लगातार उपयोग में होने के कारण बार-बार खराब हो जाते हैं। आयातित एवं पुराने (Obsolete) होने के कारण इनके स्पेयर नहीं मिल रहे हैं। अतः वर्तमान प्रणाली में नई तकनीक एवं आधुनिक तकनीक के उपयोग का निर्णय नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण के जलमौसम विज्ञान उपदल के द्वारा फरवरी, 2010 में लिया गया।

4. प्रस्तावित समय आँकड़ा अर्जन प्रणाली (Modified RTDAS)

आर.टी.डी.ए.एस. के उक्त विस्तारित नेटवर्क में पूर्व में उल्लेखित सेटेलाइट कम्यूनिकेशन की जगह जी.एस.एम. (ग्लोबल सिस्टम फॉर मोबाइल कम्यूनिकेशन), का उपयोग किया जाएगा, जो कि मोबाइल फोन तकनीक है जिससे आप सभी परिचित हैं। न.नि.प्रा. द्वारा वर्तमान नेटवर्क के 26 स्थलों में से समुचित वैज्ञानिक पुनर्विचार के पश्चात् 20 स्थलों को चुना गया है। इनके अतिरिक्त 20 नए सुदूर स्थल स्थापित करने की योजना बनाई गई है। भागीदार राज्यों के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु नेटवर्क के वैज्ञानिक पुनर्विचार (Scientific review) के पश्चात् वास्तविक समय आँकड़ा अर्जन प्रणाली में इन 20 नए सुदूरवर्ती स्थलों को कार्यान्वित किया जायेगा। जहाँ वर्तमान उपग्रह दूरसंचार को जी.एस.एम. तकनीक पर आधारित दूरसंचार प्रणाली से बदला जाएगा। इस प्रकार प्रस्तावित नेटवर्क में इन्दौर स्थित मुख्य नियंत्रण केन्द्र के अलावा 40 सुदूर स्थल रहेंगे। इन 40 स्थलों में से 7 परियोजना स्थल (प्रोजेक्ट स्टेशन) संवर्ग के, 16 स्थल जी.एण्ड डी. संवर्ग के तथा 15 स्थल एम.एस. संवर्ग के रहेंगे, जो कि सरदार सरोवर एवं इंदिरा सागर परियोजना के लिए जल अन्तर्प्रवाह का पूर्वानुमान एवं उपयोगी जल के आंकलन हेतु सहायक होंगे। इसके अतिरिक्त दो स्थलों में से एक स्टेशन सिंचाई उपमार्ग सुरंग के आपरेशन को मानीटर करने के लिए आई.बी.पी.टी. नियंत्रण कक्ष में एवं एक स्टेशन नर्मदा मुख्य नहर के माध्यम से राजस्थान के हिस्से के जल प्रवाह की मॉनीटरिंग के लिए गुजरात-राजस्थान सीमा पर सीलू (जिला जालौर, राजस्थान) में स्थापित करना प्रस्तावित है।

5. जी.एस.एम./सेल्यूलर तकनीक : संक्षिप्त विवरण

प्रस्तावित प्रणाली में जी.एस.एम. मॉडम के साथ सेन्सर्स, डेटा लॉगर होंगे। सेन्सर्स एवं डाटा लॉगर के मध्य तार/बेतार द्वारा सम्बन्ध रहेगा। डाटा लॉगर को बिजली की आपूर्ति करने के लिए बैटरी एवं बैटरी को चार्जिंग करने के लिए सोलर पेनल होंगे। मॉडम का सम्पर्क एक डिजीटल रेडियो नेटवर्क से होगा। डाटा लॉगर के द्वारा जी.एस.एम. मॉडम की सहायता से सेन्सर के आँकड़ों को डिजीटल रूप में डिजीटल सेल्यूलर रेडियो टॉवर द्वारा मुख्य नियंत्रण केन्द्र, इन्दौर को ट्रांसमीट किया जाएगा। उपरोक्त प्रणाली की कार्यविधि नीचे दी गई रेखाचित्र के द्वारा दर्शाई गई है।

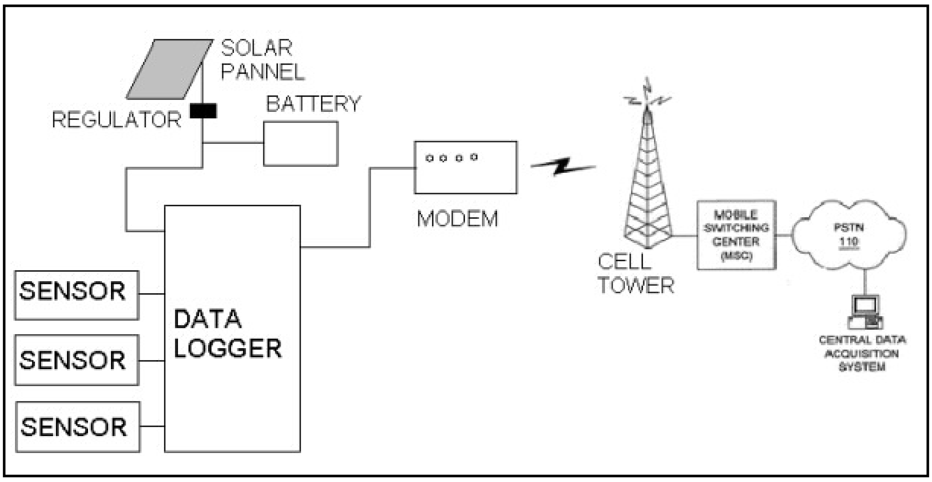

जी.एस.एम. तकनीक का उपयोग जब डाटा कम्यूनिकेशन के लिए होता है तो उसे सेल्यूलर डिजिटल पैकेट डाटा (CDPD) तकनीक कहते हैं। यह तकनीक भी आंकड़ों के आदान-प्रदान के लिए सामान्य मोबाइल उपभोक्ताओं के लिए वर्तमान में मौजूद मोबाइल टावर का ही उपयोग करती है। एक बार जो मोबाइल उपभोक्ता (यूजर) इस प्रणाली में पंजीकृत हो जाता है, वह इस नेटवर्क में सक्रिय हो जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि पंजीकृत उपभोक्ता, मोबाइल द्वारा आँकड़ों का आदान-प्रदान तत्काल कर सकता है, क्योंकि सी.डी.पी.डी. एक ''पैकेट-स्विच्ड-नेटवर्क है'' जो रेडियो चैनल को शेयर करता है। अतः इसके उपयोग का किराया (tariff) स्थानान्तिरत किए गए डाटा की मात्रा के हिसाब से होता है न कि इस बात से कि यूजर नेटवर्क में कितनी देर (Call time) रहा।

जी.एम.एम. उपभोक्ता को वर्तमान मोबाइल प्रणाली का उपयोग करने के लिए एक मॉडम की जरूरत होती है तथा मोबाइल सेवा प्रदाता (Service Provider) के साथ एक खाता खोलना होता है। उपभोक्ता सिर्फ मॉडम के लिए जिम्मेदार होता है, जबकि मोबाइल सेवा एवं टावर का रख-रखाव आदि सेवा प्रदाता (Service Provider) ही देखता है। इस प्रणाली में प्रेषक (Transmitter) का आँकड़े (Data Packet) भेजने के लिए मोबाइल नेटवर्क के सम्पर्क में रहना आवश्यक नहीं है, यदि रिसीवर मोबाइल नेटवर्क में है तो डाटा पैकेट उसे तत्काल प्राप्त हो जाता है। लेकिन यदि नेटवर्क में नहीं है तो ये आँकड़े सर्वर में तब तक सुरक्षित रहते हैं जब तक कि यूजर नेटवर्क के सम्पर्क में नहीं आता और उसे आँकड़ें नहीं भेज दिए जाते।

6. उपसंहार :

जी.एस.एम./सेल्युलर तकनीक के सेटेलाइट कम्यूनिकेशन की तुलना में कई लाभ हैं जैसे कि इस प्रणाली की स्थापना आसान एवं रखरखाव सस्ता है। इसके माध्यम से द्विगामी (two way) संचार संभव है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके द्वारा प्राप्त आँकड़े को पेजर, इंटरनेट एवं अन्य मोबाइल फोन पर भी प्राप्त किया जा सकता है।

जैसा कि आप सबको विदित है कि वर्तमान में मोबाइल फोन तकनीक गाँव-गाँव तक पहुँच गया है। यह प्रणाली द्विगामी संचार सुविधा प्रदान करेगी तथा प्रोसेस्ड डाटा को सीमित पहुँच के साथ इंटरनेट पर दर्शायेगी। अतः जी.एस.एम. टेक्नालाजी की प्रणाली को उपयोग में लाने से सुदूरवर्ती स्थल के द्वारा विभिन्न सेन्सरों के माध्यम से आवश्यक जलमौसम विज्ञान के आँकड़े मुख्य नियंत्रण केन्द्र, इन्दौर में ट्रांसमीट किया जा सकना सुगम हो जाएगा। हमें पूरा विश्वास है कि उपरोक्त प्रणाली की योजना का कार्यान्वयन नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण के सक्षम अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा मानसून 2011 से पूर्व कर लिया जाएगा। भविष्य में उपरोक्त प्रणाली एवं सरदार सरोवर जलाशय नियमन समिति के सक्रिय संयोजन से नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण पंचाट के द्वारा दिए गए विभिन्न महत्वपूर्ण दायित्वों का अनुपालन भागीदार राज्य सरकारों एवं राष्ट्र के हित में कुशलतापूर्वक कर सकेगी।

[सहयोग : श्री अनिल कुमार सिन्हा, निदेशक (दूरमिति), श्री अजय कुमार खरे, उप निदेशक (दूरमिति)]

चट्टान सबसे कठोर होती है, पर लोहा उसे तोड़ देता है। लोहा मजबूत होता है पर अग्नि उसे पिघला देती है। अग्नि बहुत सशक्त होती है, पर पानी के सामने टिक नहीं पाती। इसका मतलब पानी की धार सबसे तेज होती है। पर पानी की धार से भी एक चीज सबसे शक्तिशाली होती है और वह है इंसान की संकल्पशक्ति। अगर इंसान की संकल्पशक्ति जाग जाए तो वह पानी की तेज धार को भी मोड़ दिया करती है।

जल प्रबंधन में जन सहयोग

नरेश लाल
निदेशक (सिविल)

विश्व के सभी देश मौसम परिवर्तन की स्थिति से प्रभावित है। इसके लिए गत वर्ष विश्व के सभी देश एकत्रित हुए थे परन्तु किसी भी सर्वमान्य हल पर नहीं पहुँच पाएँ। वर्तमान में हमारे देश की स्थिति यह हैं कि देश के कुछ हिस्सों में सूखा पड़ रहा है तो कुछ हिस्से बाढ़ग्रस्त रहते हैं। इस विधा के पारंगत विशेषज्ञों ने देश के सभी लोगों को इस संबंध में कई बार चेतावनी दी है। इस संबंध मे कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि यह एक नियमित होने वाली स्थिति है और 40 से 50 सालों में यह स्थिति आती ही है तथा मौसम के मिजाज मे परिवर्तन होता रहता हैं। जबकि कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि हमें सतर्क करने के लिए ये चेतावनी है ताकि सूखा, बाढ़ और मौसम परिवर्तन से निपटने के लिए हम सभी को एक साथ होकर इस पर प्रभावी ढंग से कार्य करना चाहिए। भारत के कुछ हिस्से को छोड़कर अधिकांश भाग सूखे की समस्या से हमेशा ग्रस्त रहते हैं। वही कुछ क्षेत्र जों हमेशा बाढ़ की समस्या से ग्रस्त रहते थे परन्तु आज वे भी सूखे की समस्या झेल रहे हैं। इसका प्रमाण हैं असम का चेरापूँजी, जो अत्यधिक वर्षा के लिए प्रसिद्ध था। आज वहाँ सूखा पड़ रहा है। विशेषज्ञों ने कई अवसरों पर सरकार और लोगों को पानी का मितव्ययतापूर्वक उपयोग करने के लिए कहा भी है।

विश्व बैंक के एक विशेषज्ञ श्री जॉन ब्रिस्को ने अक्टूबर-2005 में कहा था कि भारत सूखे की समस्या से ग्रस्त है, नदियाँ सूख रही हैं एवं प्रदूषित हो रही है तथा अब भू-जल का स्तर कम होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत के 15 प्रतिशत जल स्रोत बहुत ही नाजुक स्थिति में हैं और यदि यही स्थिति जारी रही तो सन् 2030 तक 60 प्रतिशत जल स्रोत नाजुक स्थिति में पहुंच जाएंगे। राज्य सरकारों द्वारा किसानों को मुफ्त बिजली देना भी इस स्थिति को और बढ़ा रहा है, क्योंकि वे नदी एवं कुओं में पम्प लगाकर भू-जल का अंधाधुंध उपयोग कर रहे हैं, जबकि वर्षा के जल से रिचार्जिंग उतना नहीं हो पा रहा है। उन्होने चेताया कि भारत की जल प्रदाय व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। आईए जाने पानी से संबंधित कुछ आवश्यक घटको को –

सूखा

सूखे शब्द से आशय मौसम परिवर्तन के कारण कम वर्षा का होना तथा भू-जल एवं उपयोग में लिये जाने वाले सतही जल आदि में वृद्धि न होना है। सूखे की समस्या ने विशेषज्ञों, योजनाकारों एवं समाज का ध्यान आकर्षित किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के 63 वर्षो बाद भी हम सभी के लिए स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं करा पाए हैं। धरती के कुल जल का लगभग एक प्रतिशत पानी ही पीने के लायक है तथा शेष जल लवण एवं अन्य रासायनिक पदार्थो से परिपूर्ण है जो पीने के योग्य नही है। वह दिन दूर नही जब हमे गुजरात एवं कुछ अन्य राज्यों के कुछ भागों की तरह बोतल का पानी पीने को मजबूर होना पड़ेगा।

भू-जल की स्थिति

भारत सरकार द्वारा संसद में दिए गए बयानों के अनुसार लगभग 33 प्रतिशत भू-जल पीने लायक नहीं है, क्योंकि इसमें आयरन फ्लोराइड, आर्सेनिक और नमक (लवण) की मात्रा बहुत अधिक है। यह स्थिति देश के सभी भागों में एक समान तो नहीं है फिर भी राजस्थान, कर्नाटक और गुजरात की स्थिति बहुत अधिक विकट है। अध्ययनों में पाया गया है कि भू-जल में 254 जिलों में ज्यादा आयरन, 224 जिलों में ज्यादा फ्लोराइड और 163 जिलों में ज्यादा नमक है और 34 जिलों में आर्सेनिक की अधिक मात्रा पाई गई।

यदि हम गुजरात की स्थिति देखे तो 26 में से 18 जिलों के भूजल में लवण एवं फ्लोराइड दोनों की मात्रा ज्यादा है तथा 3 जिलों में नमक की मात्रा ज्यादा है। केन्द्रीय भू-जल बोर्ड के अध्ययनों में पाया गया कि कर्नाटक के 31 में से 21 जिलों में ज्यादा आयरन एवं फ्लोराइड पाया गया। राजस्थान राज्य की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है वहाँ के 27 जिलो के भूजल में ज्यादा नमक एवं फ्लोराइड पाया गया। भारत की राजधानी दिल्ली की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। 9 में से 5 जिलों में ज्यादा फ्लोराइड, 2 जिलों में ज्यादा नमक और सभी 9 जिलों में ज्यादा आयरन पाया गया। देश के सभी हिस्सों में भू-जल का स्तर नीचे की ओर बहुत तेजी से जा रहा है। वर्तमान में आम आदमी पानी की आवश्यकता के लिए 1000 फीट तक बोरवेल कर पानी प्राप्त कर रहा है, परन्तु उसे यह नहीं पता कि यह पानी पीने के योग्य है भी या नहीं। भूमि में स्थित कुछ केमिकल मानव के शरीर के लिए हानिकारक हैं यदि वे एक

निर्धारित मात्रा से अधिक उपयोग में लाए गए तो इससे कई प्रकार की बीमारियाँ होने की सम्भावना होती है।

वर्षा जल

भारत सरकार के विभिन्न विभाग वर्षा के जल को रोकने हेतु प्रयत्नशील है तथा वे बाँध, तालाब और वाटर हारवेस्टिंग के द्वारा वर्षा के जल को एकत्रित करते हैं, परन्तु फिर भी 37 प्रतिशत जल समुद्र में बह जाता है। भारत सरकार की जल क्षेत्र में कार्य करने वाली अग्रणी संस्था केंद्रीय जल आयोग ने अपने बयानों में कहा है कि हम वर्षा से चार अरब क्यूबिक मीटर जल प्राप्त करते हैं, इसमें से 1869 क्यूबिक मीटर पानी नदियों में बहता है। परन्तु भरने की क्षमता के अभाव में 1332 क्यूबिक मीटर पानी समुद्र में बह जाता है। यदि हम देश में उपलब्ध कुल उपयोगी जल की मात्रा को देखे तो 32 प्रतिशत पानी ब्रह्मपुत्र एवं बराक बेसिन से तथा 28 प्रतिशत गंगा बेसिन से प्राप्त होता है। अन्य नदियाँ माही, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा एवं पेन्नार में इससे कम मात्रा में जल उपलब्ध है।

जल प्रदाय

मध्य प्रदेश के लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग ने घोषित किया है कि मध्य प्रदेश के जल प्रदाय में 30 जिलों में प्रदूषित पानी पाया गया। उन्होने पाया कि प्रदेश के 127036 स्थानों में से 8568 क्षेत्रों में भू-जल प्रदूषित था। 764 क्षेत्रों में ज्यादा फ्लोराइड, 568 क्षेत्रों के पानी में खारापन। 545 क्षेत्रों में ज्यादा आयरन तथा 939 क्षेत्रों में ज्यादा नाइट्रेट था। उपरोक्त आँकड़े हमारा ध्यान इस ओर खींच रहे हैं कि पानी की कमी और प्रदूषण सभी स्रोतों में है। केंद्र और राज्य सरकार हमेशा नई-नई योजनाएं बनाकर लोगों को स्वच्छ जल उपलब्ध कराने हेतु कटिबद्ध हैं। हालांकि मध्य प्रदेश सरकार जल की भीषण कमी से अवगत है अब आवश्यकता है कि इस ओर ध्यान दिया जाए, चूँकि यह कार्य कई विभागों द्वारा देखा जाता है। अत: किसी एक विभाग को इसके लिए उत्तरदायी ठहराना उचित नहीं होगा। केवल सरकारी विभाग ही नहीं उपभोक्ता भी उपरोक्त स्थिति में समान रुप से उत्तरदायी है। वे सरकार द्वारा जारी जल योजनाओं की ओर ध्यान ही नहीं देते हैं तथा न ही वर्षा के जल को सहेजने की कोशिश करते हैं तथा जल को अनावश्यक रुप से बहाते रहते हैं।

पानी की कमी को दूर करने के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा नर्मदा नदी के नजदीक स्थित चार शहरों इन्दौर, भोपाल, देवास एवं जबलपुर को नियमित रूप से नर्मदा का जल प्रदाय करने हेतु 'प्रोजेक्ट उदय' के नाम से एक योजना तैयार की हैं तथा उस पर कार्य जारी है।

सरकार द्वार भूजल के दुरूपयोग पर भी रोक लगाई गई है तथा बिना अनुमति बोरवेल करने पर प्रतिबंध लगाया गया है। नए बनने वाले भवनों की अनुमति में जल पुनर्भरण आवश्यक रूप से किए जाने का प्रावधान किया गया हैं तथा बिना अनुमति नए बोरवेल खोदने पर दण्ड की व्यवस्था की है। फिर भी ये उपाय पर्याप्त नही है क्योंकि ऐसा कोई एक विभाग नही हैं जिसे इसके लिए उत्तरदायी ठहराया जा सके। जल एक महत्वपूर्ण विषय हैं इसके लिए छोटे-छोटे प्रयास सफल नहीं हो सकते है। सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किए जाने की आवश्यकता है कि एक ऐसी एजेन्सी बनाई जाए जो जल की कमी और सम्बन्धित विषयों के लिए पूर्ण रूप से उत्तरदायी हो। इस सम्बन्ध मे एक विशेष जल प्राधिकरण बनाए जाने का निर्णय लिए जाने की आवश्यकता है जो वित्तीय, प्रशासनिक, तकनीकी एवं कानूनी रूप से परिपूर्ण हो तथा निर्णय लेने मे और निर्णयों का पालन कराने में सक्षम हों, जो जल रिसाव, जल चोरी, सक्षम प्रबंधन केवल किसी एक जल क्षेत्र का नही बल्कि ;.जल से संबंधित सभी विषयों अर्थात् मानसूनी जल सहेजने से संबंधित हो या भूजल की स्थिति सुधारने से संबंधित हो या जल स्रोतों को प्रदूषित करने से संबंधित हो या अत्यधिक जल उपभोग करने से सम्बन्धित हो। यह प्राधिकरण वॉटर शेड प्रबंधन पर भी ध्यान दे तथा जल का पुनर्भरण का पालन कराने के साथ-साथ जल का उपयोग मितव्ययता से करने के लिए, लॉन एवं पेड़-पौधों तथा निर्माण के कार्यो में पीने के पानी का उपयोग न करने के लिए लोगों को समझाइश दें। इस दिशा में पहल सभी शासकीय भवनों से की जानी चाहिए। साथ ही जल की स्वच्छता, जल प्रदाय, जल संरक्षण आदि के लिए जल प्राधिकरण पूर्ण रूप से सक्षम एवं जबाबदेह हो।

इस तरह के जल प्राधिकरण विश्व के कई देशों मे हैं तथा भारत के केरल मे भी इस तरह का जल प्राधिकरण कार्यरत है। बस आवश्यकता हैं सरकार की इच्छाशक्ति और जनता के सहयोग की। अभी जनमानस में यह धारणा है कि घरेलू उपयोग के लिए जल प्रदाय करना सरकार का दायित्व है, जिसे बदलने की आवश्यकता है। जल के उचित प्रबंधन में सरकारी एजेंसियों एवं जन सहयोग के समुचित प्रयास से ही दिनों दिन भयावह होती जा रही जल समस्या से निदान पाया जा सकता है।

अतः आइये ! आज से ही क्यों न हम इस अभियान में जुट जाएँ तथा पानी बचाने के लिए सार्थक प्रयास करे ताकि कल हमे पानी की समस्या का सामना न करना पड़े।

अपने कार्य एवं संस्थान से करे प्रेम

◖ देवेन्द्र सक्सेना
कार्यपालक अभियंता (ऊर्जा प्रबन्धन केन्द्र)

हमें हमेशा अपने कार्य, कार्य स्थल एवं संस्थान से प्रेम करना चाहिए और अपने कार्य को तत्परता से निभाकर अपने संस्थान को एक आदर्श एवं रचनात्मक संस्थान बनाने में सहयोग प्रदान करना चाहिए। यह तभी संभव है जब हम सभी मिलकर कार्य करें और यह सोचे कि यह संस्थान हमे इतना सब कुछ दे रहा है, बदले में हम संस्थान को पहचान क्यों नहीं दे। यदि हम यर्थाथ में सोचेंगे तो पायेंगे कि हम इसके बहुत ऋणी है, जाने-अनजाने में हम संस्थान की निंदा करते है। प्रकृति के समान संस्थान निरंतर हमे कुछ न कुछ देता रहता है तो हमारी भी नैतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारी होनी चाहिए, तभी हम अपने समाज एवं संस्थान को कुछ देकर पतन के रास्ते से बचा सकते है, चाहे जितने बड़े भूकम्प/बदलाव आए पर यदि हमारी नींव मजबूत है तो हम सभी सुरक्षित है, हम हमेशा ऊंचे पायदान पर जो लोग या संस्थान बहुत अच्छा कार्य कर रहे है उनसे अपनी तुलना करके दुखी होते रहते है, यह कभी नहीं सोचते कि उनकी नींव की ईंट कितनी मजबूत है और उन्होंने यहाँ तक पहुँचने में कितना संघर्ष किया है हमें भी वही अपनाना है, तभी दुनिया हमे और हमारे संस्थान को सराहेगी यह दुनिया वैसी ही है जैसा हम सोचते है, आप जितना सोच सकते है उतना इस दुनिया में संभव है, कल्पनाओं से विचार बनते है विचारों से कार्य होते है ओर कार्यो से परिणाम सामने आते है, हम सकारात्मक सोंचे, दुनिया में जितने आविष्कार हुए वह सकारात्मक सोच के आधार पर ही हुए और आज सारा विश्व उससे लाभान्वित है, इस दौर में जब सारी दुनिया एक हो रही है बड़ी- बड़ी कंपनियाँ, बड़े-बड़े देश एक दूसरे के करीब आ रहे हैं एवं मानव रूपी ताकत को पहचाना जा रहा हैं और उनकी दक्षता एवं क्षमता को भुनाने के लिये नए-नए तरीके अपना रहे है, अत: हमें भी अपने संस्थान की मानव रूपी ताकत को पहचानना है, इसके लिए हम निम्न को बातों अपनाकर हम सुखी और हमारे संस्थान को पहचान प्रदान कर सकते है –

1. संस्थान में सकारात्मक अनुशासन हो।
2. कार्यालय के कार्यों में पारदर्शिता के साथ-साथ लोग अपने कार्यों के प्रति उत्तरदायी हो।
3. क्षमता एवं दक्षता के आधार पर ही कार्यो का विभाजन हो।
4. कार्यो को पूर्ण करने की समय-सीमा हो, एवं उनकी निश्चित समयावधि पर उचित समीक्षा हो, जिससें कार्यो में निरंतरता बनी रहे।
5. रचनात्मक कार्य प्रणाली अपनाते हुए समस्याओं को सुलझाए एवं जरूरी बदलाव के लिए स्वयं तथा लोगों कों तैयार रखे एवं उन्हें लागू करने में आ रहे अवरोधों का कुशल प्रबंधन द्वारा हल करें।
6. हमेशा उत्साही एवं रचनात्मक लोगों की एक टीम बनाए एवं कार्यो के समुचित कार्यान्वयन के लिए उन्हें समय-समय पर कार्य सौपे।
7. संस्थान कें कार्यों के हिसाब से लोगों का चयन हो, एवं उनको सौपे गये कार्यो के लिए पर्याप्त संसाधन हो, उनके समुचित विकास एवं दक्षता बढ़ाने के लिये उचित प्रशिक्षण हो, भविष्य में उन्नति के अवसर हो एवं कार्य करने का वातावरण हो, जिससे कि वह अपने आपको सुरक्षित महसूस कर सकारात्मकता एवं आपसी विश्वास से कार्य कर सके।
8. ऐसी कार्य प्रणाली विकसित करे कि किसी व्यक्ति विशेष के होने न होने से कार्यों में अवरोध न हो।
9. संस्थान में कार्यरत समस्त कर्मचारियों का उत्तरदायित्व है कि वह संस्थान में विद्यमान दिशा-निर्देशों का पालन करें एवं समय -समय पर अपने सुझाव संबधित को अवगत कराते रहे। जिससे समुचित विकास हो एवं हम सब मिलजुल कर कार्य करे, और जिससे अपने साथ-साथ संस्थान का भी नाम रोशन हो।

कार्य ही पूजा है, कार्य स्थल ही पूजाघर है और रचनात्मकता ही जीवन है।

नारी स्वतंत्रता या आर्थिक स्वतंत्रता

राजेश ठक्कर
सहायक जन सम्पर्क अधिकारी

नारी, स्त्री, औरत,महिला आप इसे किसी भी नाम से पुकारे परन्तु यह शब्द आते ही हमारे सामने एक ऐसी छवि समाने आती हैं जो पूरे घर के साथ-साथ परिवार की देखभाल भी करती है तथा मकान को घर बनाती है तथा उसके बने रहने मे सदा सहयोग करती है।

आज भी यदि घर का कोई मालिक होता हैं तो वह स्त्री ही होती है। इस बात का पता किसी भी ऐसे घर को देखकर लगाया जा सकता हैं जहाँ नारी नही हैं क्योंकि वह घर बाहर से कितना भी सुंदर हो, परन्तु घर की आतंरिक दशा चीख-चीख कर बता देगी कि यहाँ एक स्त्री का अभाव है।

प्राचीन ग्रंथों में नारी को अबला के नाम से पुकारा गया हैं परन्तु इतिहास गवाह हैं कि अधिकांश युद्ध केवल महिलाओं के कारण ही हुए हैं यह भारत के दो पौराणिक महान ग्रंथो रामायण एवं महाभारत से ज्ञात है।

सभी धर्मों में यह मान्यता हैं कि ईश्वर ने पहले पुरूष को बनाया तथा जब वह अकेलापन महसूस करने लगा तो फिर ईश्वर ने महिला को बनाया। हिन्दु धर्म के अनुसार उन्हें मनु एवं श्रद्धा नाम दिया गया। शायद ऐस वृतांत अन्य धर्मो मे भी होगे या हो सकते हैं।

टी.वी., इंटरनेट, अनेक टी.वी. चैनल और मीडिया के आने से मनोरंजन के साधनों के साथ-साथ एक और अच्छाई या बुराई भारत मे प्रवेश कर गई हैं, वह हैं स्त्री या नारी स्वतंत्रता। तो क्या पहले भारतीय नारी परतंत्र थी। तो क्या यदि यह विदेशी चैनल आदि भारत में नही आते तो भारतीय महिलाएँ परतंत्र रहती और इनके कारण ही स्वतन्त्र हुई हैं। विदेशी आयतित सामग्री के साथ पश्चिमी सभ्यता मान्यताओ का पर्दापण भी भारत मे बहुत तेजी से हो रहा है।

वर्तमान मे आए दिनो नारी स्वतंत्रता के समाचार प्रकाशित होते रहते हें तथा महिलाएँ आज अच्छा वेतन पाकर आर्थिक रूप से स्वतंत्र भी हो रही हैं। क्या यही आर्थिक स्वतंत्रता नारी स्वतंत्रता हैं ? आजकल नारी अकेली भी रह रही हैं तथा कहा जाता है कि वे खुश हैं तो क्या ये वाकई सच हैं ? साथ ही अखबारों मे स्त्री एवं पुरूष का बिना विवाह के साथ रहना मान्य होना एवं सर्वोच्च न्यायालय द्वारा हर क्षेत्र में इस बात का समर्थन करना क्या यही नारी स्वतंत्रता हैं ? महिलाएँ हर क्षेत्र मे पुरूषों की बराबरी कर रही हैं ऐसा समाचार पत्रों में प्रकाशित होता रहता है तथा अन्य समाचार माध्यमों से ज्ञात होता हैं।

जबकि ईश्वर द्वारा महिला को कुछ विशेष शक्तियॉ एवं अधिकार प्रदान किए गए है यह बात विज्ञानीय तथ्यो से प्रमाणित हो चुकी हैं कि महिला मे ज्यादा सहन शक्ति, पहचानने की शक्ति, रंगो कों पहचानने की शक्ति, सुँघने की शक्ति और सब से विशेष मॉ बनने की शक्ति ईश्वर द्वारा केवल महिला को ही प्रदान की गई हैं।

यदि यह कहा जाए कि आज की नारी पुरूषों के समान हैं तो क्या वे ईश्वर द्वारा प्रदत्त विशेष शक्तियों को त्यागकर अपने स्थान से नीचे आकर पुरुष से बराबरी नहीं कर रही हैं।

आईए जाने स्वतंत्रता से क्या आशय है जिस पर स्वयं का नियंत्रण हों तथा वह किसी अन्य के नियत्रंण को नकारने की स्थिति में हो तो क्या नारी आज बिना पुरूष के रह सकती है ? क्या नारी स्वतंत्र होकर अकेली रह सकती है ? इसका जबाब हॉ में हो सकता हैं परन्तु क्या यह प्रकृति के विरूद्ध नही हैं।

आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने पर स्त्रियाँ आजकल अकेली भी रह रही है। परन्तु युवावस्था तो नौकरी आदि करने मे निकल जाती हैं परन्तु 40 वर्ष की आयु के आते-आते उन्हे पुन: परिवार की आवश्यकता महसूस होने लगती है तथा यह प्रमाणित हो चुका हैं कि बहुत सी महिलाएँ अकेलापन महसूस कर डिप्रेशन मे जाने लगती हैं। इसका एक और प्रमाण है कि सेना मे कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारियों को सभी सुख-सुविधा एवं विशेष सम्मान प्राप्त होने के बाद भी वे अपने परिवार के अभाव में आत्महत्या कर रहे हैं।

सामान्यत: यह सर्वविदित एवं अविवादित तथ्य हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं तथा वह अकेला नहीं रह सकता चाहे वह स्त्री हो या पुरूष।

क्या हम यह नही जानते कि यह जो आर्थिक स्वतंत्रता हमारे यहाँ आज आई हैं वह बरसों पहले विदेशो में आई थी और उसके परिणाम में हम यह देख रहे हैं कि वहाँ पति एवं पत्नी के पास बच्चे के लिए समय नही हैं तथा वे आठ दस साल की उम्र मे स्कूल मे बंदूक चला रहे हैं तथा लड़कियाँ आठ साल की उम्र में माँ बन रही हैं। महिलाएँ आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होने के कारण विवाद की स्थिति में सामंजस्य नहीं रख पाती हैं। तलाक शब्द भी वहाँ के लिए नया नही हैं। छोटी-छोटी बातों पर तलाक होते हैं तथा बच्चों को उनके भाग्य के भरोसे छोड़ दिया जाता है। वहाँ की प्रगतिशील महिलाएँ तीन चार तलाक लेकर भी अकेली रहने को मजबूर हैं या उसी स्थिति में सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करती हैं।

इसका आशय यह नही हैं कि पुरुष वर्ग या मैं नारी स्वतंत्रता के विरोधी हैं। आजकल तो हर माता- पिता यह चाहते हैं कि उनके बच्चे पढ़ लिख कर अच्छी स्थिति में रहे परन्तु वे यह कभी नहीं चाहेगे की उनका पुत्र या पुत्री बिना विवाह के किसी अन्य के साथ जीवन यापन करे या एकल जीवन व्यतीत करे।

भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण परिवार के सभी लोग मिलजुल कर कार्य करते हैं तथा परिवार का मुखिया पुरूष हुआ करता हैं। घर के सभी सदस्य अर्थात् शेष पुरूष भी मुखिया की बात मानते हैं। अत: भारत पुरूष प्रधान देश की श्रेणी में आता है। विश्व के अन्य देशों की तुलना मे भारत अध्यात्म एंव ईश्वरीय शक्ति के लिए जाना-माना जाता है और यह सर्वविदित तथ्य हैं कि भारत की महिलाओं द्वारा ही धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों की नीव डाली गई थी तथा स्त्री के बिना आज भी कोई धार्मिक कार्य सम्पन्न नही हो सकता हैं अत: उन्हे एक विशेष स्थान प्राप्त हैं।

अब विदेशी भी भारतीय अध्यात्म, संस्कृति, सभ्यता, विविधता आदि में दिलचस्पी लेने लगे हे तथा भारत आकर यहाँ की हरे रामा-हरे कृष्णा की प्रणाली को अपना कर मानसिक शांति की खोज में रहते हैं तथा भारत को एक अच्छे राष्ट्र की नजर से देखने लगे हैं।

वहीं, यदि हम अन्य देशों की तुलना करे तो भारत ही एक ऐसा देश हैं जहाँ स्त्री को अधिकतम मामलों मे निर्णय करने के अधिकार हैं परन्तु स्त्री घर मे ही रह कर कार्य करती हैं अत: उसे बाहर के कार्यो की विशेष जानकारी नहीं रहती है तथा वह एक और जिम्मेदारी लेकर अपने लिये परेशानी नहीं बनने देना चाहती हैं।

वही भारत के ही केरल, मेघालय, मणिपुर एवं अन्य कुछ राज्यों मे मातृ सत्तात्मक समाज का प्रचलन सदियो से है तथा आज भी जारी हैं। वहा पुरूष महिला के घर जाकर रहता हैं तथा घर में सभी निर्णय महिला ही करती हैं।

लोगों को ऐसा मानना हैं कि वर्तमान मे जिस स्वंतत्रता का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है वह केवल उसकी आर्थिक स्वतंत्रता है जिसके कारण महिला स्वयं शोषित है। वह कार्यालय एवं घर दोनों स्थानों पर कार्य कर रही है तथा बच्चों की देखभाल भी कर रही हैं यदि स्त्री वाकई पुरुष जैसी स्वतंत्रता चाहती हैं तो इसका एकमात्र उपाय हैं कि वह माँ बनने के अपने विशेषाधिकार का त्याग करे तो फिर क्या स्त्री एक विशेष पहचान से वंचित नहीं हो जाएँगी। ईश्वर द्वारा प्रदत्त माँ का जो दर्जा उसे दिया गया है, उसका क्या होगा?

इसका आशय यह नही हैं कि पुरूष समाज नारी स्वतंत्रता का विरोधी है। न तो नारी कभी परतंत्र थी न ही वह स्वतंत्र होकर अकेली रह सकती हैं। नारी एवं पुरूष दोनों का परिवार में अपना -अपना महत्व एवं उचित स्थान हैं जिसमे दोनों की सीमाएँ एवं मर्यादाएँ है उनका पालन कर ही सही मायने में स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा स्वतंत्रता वैसी ही मिथ्या हैं जैसे स्वर्ग या नर्क देखा किसी ने नहीं फिर भी सभी स्वर्ग ही जाना चाहते है।

राष्ट्रीय अखण्डता, सांस्कृतिक एकता तथा आपसी सद्‌भावना के लिए केवल एक ही सम्पर्क भाषा है वह है हिन्दी।

-फादर कामिल बुल्के

सरदार सरोवर पावर काम्प्लेक्स के नदी तल विद्युत गृह की मशीनों का चलाने के आवश्यक दिशा निर्देश

हेमंत पाण्डेय
सहायक कार्यपालक अभियंता(विद्युत)

1. सरदार सरोवर जलाशय नियमन समिति सचिवालय द्वारा हर माह के प्रत्येक दस दिवस हेतु एक परिपत्र जारी किया जाता है, इस परिपत्र में नदी तल विद्युत गृह को चलाने हेतु उन दस दिनों के लिए पानी की मात्रा निर्धारित की जाती है, जिसके आधार पर नदी तल विद्युत गृह की मशीनों को चलाने का दैनिक औसत मशीन अवर निर्धारित किया जाता है।
2. उपरोक्त निर्धारित दैनिक औसत मशीन अवर के 5 प्रतिशत अंतर (कम या अधिक) तक आवश्यकतानुसार नदी तल विद्युत गृह की मशीनों को चलाने के नियमित प्रयास किए जाते हैं।
3. अगर सरदार सरोवर बाँध से पानी का ओवरफ्लो नहीं हो रहा है तो उपरोक्त निर्धारित मशीन अवर को सुबह 9.00 बजे से अपराह्न 3.00 बजे तक तथा सांय 6.00 बजे से रात्रि 11.00 बजे तक की समयावधि में ही चलाने के प्रयास किए जाते है।
4. उपरोक्त निर्धारित मशीन अवर एवं निर्धारित समयावधि के अलावा अगर मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्य की अन्य समयावधि में तथा निर्धारित मशीन अवर से अधिक मशीन चलाने हेतु कोई विशेष निवेदन प्राप्त होता है, तो नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण उक्त विशेष निवेदन को पश्चिम क्षेत्रीय भार प्रेषण केंद्र की सलाह से उक्त विशेष निवेदन को लागू करने का भरसक प्रयास करता है। साथ ही यह भी ध्यान रखा जाता है कि उक्त निवेदन नियमित रुप से तो प्राप्त नहीं हो रहे है।
5. तदुपरांत अगले दिन के चौबीस घंटों को 15-15 मिनिट के 96 भागों में बाँट कर उपलब्ध मशीनों की संख्या, उनसे उत्पन्न होने वाली विद्युत का मेगावॉट, तथा कितनी मशीनों को 96 भागों में से कब-कब चलाना है आदि एक टेबुलर फार्म में बना कर पश्चिम क्षेत्रीय भार प्रेषण केंद्र, म.प्र., महाराष्ट्र, गुजरात के भार प्रेषण केंद्रों, सरदार सरोवर नदी तल विद्युत गृह के नियंत्रण कक्ष एवं अन्य सभी संबंधित अधिकारियों को एक दिवस पूर्व, फैक्स एवं ई-मेल द्वारा प्रेषित कर दिया जाता है।
6. सरदार सरोवर परियोजना के स्वामित्व वाले राज्यों से यदि कोई विशेष निवेदन प्राप्त होता है तो उपरोक्त वर्णित विधि से संशोधित कर संशोधन सभी संबंध विभागों एवं अधिकारियों को पुन: प्रेषित किया जाता है।

मैंने हिंदी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर और असम से केरल के गाँव-गाँव में जाकर मैं भूदान ग्राम दान का क्रांतिपूर्ण संदेश जनता तक न पहुंचा पाता। यदि मैं मराठी का सहारा लेता तो महाराष्ट्र से बाहर और कहीं काम न बनता। इसी तरह अंग्रेजी भाषा लेकर चलता तो कुछ प्रांतों में चलता, परन्तु गाँव-गाँव में जाकर क्रान्ति की बात अंग्रेजी द्वारा नहीं हो सकती थी। इसलिए मैं कहता हूँ कि हिंदी भाषा का मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है, इसने मेरी बहुत बड़ी सेवा की है।

प्रत्येक प्रान्तीय भाषा का अपना स्थान है। मैंने अनेक बार कहा है कि जिस प्रकार मनुष्य को देखने के लिए दो आँखों की आवश्यकता होती है, उसी तरह राष्ट्र के लिए दो भाषाओं, प्रान्तीय भाषा और राष्ट्र भाषा की आवश्यकता होती है, इसलिए हम लोगों ने दो भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य माना है। भगवान शंकर का एक तीसरा नेत्र था जिसे ज्ञान नेत्र कहते हैं। इसी तरह हम लोगों को भी तीसरे नेत्र की जरूरत हो अनुभव हो तो संस्कृत भाषा का भी अध्ययन लाभकारी सिद्ध होगा।

-विनोबा वाणी

खारा क्यों होता है समुद्र का पानी

संकलित ◖ **प्रवीण नीखरा**
सहायक अभियंता (दूरमिति)

समुद्र का पानी खारापन लिए हुए यानी नमकीन जैसे स्वाद वाला होता है। समुद्र में नमक पहुँचा कहाँ से, इसके बारे में विशेषज्ञों का कहना है कि समुद्र का नमक करोड़ों वर्षों के दौरान नदियों द्वारा वहाँ पहुँचाया गया है। नदियों द्वारा की जाने वाली ये निरंतर प्रक्रिया है।

जब समुद्र का पानी वाष्पीकृत होता है, तो वह हवा में उठकर बादल बन जाता है। यही बादल जमीनी इलाकों में पहुंचकर वर्षा के रूप में बरसता है। बरसते समय उसका संपर्क हवा में मौजूद कार्बन डाइआक्साइड सल्फर डाईआक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड आदि गैसों से होता है। ये गैसें पानी में घुल जाती हैं, जिससें वर्षा जल हल्का-सा अम्लीय हो जाता है। जब यह अम्लीय जल चट्टानों और जमीन पर गिरता है, वह उनमें मौजूद लवणों को घुला लेता हैं। सतह से जब यह पानी बहकर नदियों में पहुंचता है, तो नदी के पानी में भी यह लवणांश आ जाता है, पर लवणांश बहुत कम होने से हमें नदी का पानी मीठा ही लगता है। नदियों का यह लवणयुक्त पानी समुद्रों में पहुँचता है। इस तरह धीरे-धीरे करोड़ों सालों से नदियों द्वारा लाए गए यही लवण समुद्रों में एकत्र होते रहते हैं।

समुद्र की चट्टाने भी जिम्मेदार

खारेपन को बढ़ाने का एक अन्य कारण समुद्रों के तल मे मौजूद चट्टानें भी हैं, जिनके लवण भी समुद्र जल में घुलते रहते है। इसी तरह समुद्रों के नीचे ज्वालामुखियां भी हैं, जो भी समय-समय पर फटकर लावा और क्लोरीन, सल्फर डाइ आक्साइड आदि गैसें हैं। समुद्र में सोडियम आदि पदार्थ भी हैं। इनके साथ क्लोरीन आदि की अभिक्रिया से लवण बन जाते है। खाने का नमक सोडियम और क्लोरीन यौगिक ही होता है। इस तरह समुद्र में लगातार नमक बनता रहता है। समुद्र जल में विद्यमान नमक तो उसी में रहता है, पर सूर्य की गरमी से समुद्र का जल वाष्पीकृत होकर समुद्र से बाहर आता रहता है और आकाश में घनीभूत होकर बादल बन जाता है। यह वाष्प शुद्ध जल होता है यानी उसमें लवणांश नहीं रहता। इस तरह समुद्र का पानी तो निरन्तर परिवर्तित होता रहता है पर लवणांश समुद्र में बस जमा ही होता जाता है। इन्हीं प्रक्रियाओं के कारण करोड़ों वर्षों में समुद्र जल खारा हो गया है।

बनते हैं नमक और चूना पत्थर

प्रक्रियाओं के निरन्तर चलते रहने के कारण समुद्र का खारापन उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाना चाहिए, पर ऐसा नहीं है। समुद्र के अंदर ऐसी कई प्रक्रियाएं होती रहती हें, जिनके कारण समुद्र जल का लवणांश समुद्र तल में निक्षेपित भी होता रहता है। इसमें कुछ शल्क-धारी जीव-जंतुओं का भी योगदान होता है। ऐसे जीवधारी अपना खोल बनाने के लिए समुद्र जल से लवणांश लेते रहते हैं। जब ये मरते हैं तो इनका खोल समुद्र के तल में इकट्ठा होने लगता है और बहुत समय बीतने पर चूना पत्थर में बदल जाता है। भू-सतह के हलचल के दौरान चूना पत्थर की परतें कहीं से कही पहुंच जाती हैं, यानी समुद्र से बाहर निकल जाती हैं। इनका खनन करके ही हम घर की दीवारों में लगाने वाला चूना प्राप्त करते हैं। एक बार चट्टानों में बदल जाने पर समुद्र का लवण फिर समुद्र के पानी को खारा नहीं बना सकता। इसलिए समुद्र का खारोपन करोड़ों वर्षों से एक जैसा बना हुआ है।

लवणों की यह सांद्रता समुद्र की हर जगह एक समान नहीं होती हे। उदाहरण के लिए नदी मुखों के पास समुद्र जल का खारापन कम होता है, क्योंकि वहां नदियों के कारण मीठे जल की भारी आमद रहती है। इसी प्रकार कुछ छोटे समुद्रों में खारापन कहीं ज्यादा हो सकता है।

मैं कहता हूँ कि आप अपनी भाषा में बोले, अपनी भाषा में लिखे। उनको गरज होगी तो वे हमारी बात सुनेंगे। मैं अपनी बात अपनी भाषा में कहूँगा। जिसको गरज होगी वह सुनेगा। आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करेंगे, तो हिंदी भाषा का दर्जा बढ़ेगा। - गाँधीजी

नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण में राजभाषा कार्यों से संबंधित गतिविधियाँ

ओम प्रकाश वर्मा
हिंदी अनुवादक

नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, इंदौर में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में किए गए कार्यों तथा प्रमुख उपलब्धियों का विवरण निम्नानुसार हैं –

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में संवैधानिक अपेक्षाओं के अनुरूप प्रभावी कदम उठाते हुए न.नि.प्रा के सचिव श्री मुकेश चौहान की अध्यक्षता में एक कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित की हुई है, जिसमें मुख्य अभियंता एवं प्राधिकरण के विभिन्न अनुभागों के निदेशक स्तर एवं हिंदी कार्यों से जुड़े विभिन्न स्तर के अधिकारी शामिल किए गए है, जिसकी बैठक तीन माह के अंतराल पर आयोजित की जाती है। 1 सितम्बर,2009 से 30 सितम्बर 2010 की अवधि में कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 35वीं, 36वीं, 37वीं एवं 38 वीं बैठक क्रमश: 18 दिसम्बर, 2009, 10 मार्च, 2010, 17 जून, 2010 एवं 6 सितम्बर, 2010 को आयोजित की गई, जिसमें राजभाषा संबंधी अधिनियम-1963 एवं इससे सम्बद्ध धाराओं, नियमों, उपनियमों, गृहमंत्रालय के राजभाषा विभाग से प्राप्त हुए हिंदी के वार्षिक कार्यक्रम की अनुपालना किए जाने के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विचार-विमर्श कर उनको व्यावहारिक रूप में कार्यान्वित करने में आ रही समस्याओं के बारे में चर्चा कर क्रियान्वित किए जाने के प्रयास के सम्बन्ध में निर्णय लिए जाते है, जिन्हें समिति के सदस्यगण समय-समय पर दिशा-निर्देश देकर कार्यालयीन कार्यों को राजभाषा हिंदी में करने के वातावरण को तैयार करवाते है। जैसे - राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा-3 (3) में उल्लेखित दस्तावेज (निविदा सूचनाएँ, निविदा प्रपत्र, प्रेस विज्ञप्तियाँ, परिपत्र, कार्यालय आदेश, आदेश आदि हिंदी एवं अंग्रेजी में जारी करवाए जाते है, हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर सदैव हिंदी में दिए जाते हैं।

प्राधिकरण द्वारा उक्त अवधि के दौरान पाँच हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की गई, जो क्रमश: 24 सितम्बर, 2009 को जल विद्युत परियोजनाएं - महत्व एवं उद्देश्य विषय पर, 31 दिसम्बर, 2009 को श्री नरेन्द्र कुमार वर्मा, प्रशासनिक अधिकारी, ननिप्रा. द्वारा हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन विषय पर 12 मार्च, 2010 को राजा रामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र के श्री मनोज कुमार शुक्ला, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक (अतिथि वक्ता) द्वारा कम्प्यूटर पर यूनिकोड प्रणाली द्वारा हिंदी में एकरूपता विषय पर, डॉ. अफ़रोज अहमद, निदेशक (पुनर्वास एवं प्रभाव आकलन) द्वारा 28 जून 2010 को सतर्कता जागरूकता विषय पर तथा 24 सितम्बर, 2010 को डॉ. पवन कुमार, निदेशक (पर्यावरण)द्वारा पर्यावरण विषयों पर आयोजित की गई थी। इन सभी में प्राधिकरण के अधिकाधिक अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिंदी में विषय सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर ज्ञानार्जन किया।

न.नि. प्रा. के केंद्रीय कार्यालय एवं इन्दौर स्थित क्षेत्रीय कार्यालय के संयुक्त तत्वाधान में पूर्व परम्परानुसार दिनांक 14 सितम्बर, 2009 से हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया था, जिसमें छ: प्रतियोगिताएं क्रमशः 5 सितम्बर, 2009 (मंगलवार) को श्री अनिल कुमार सिन्हा, निदेशक,दूरमिति एवं वित्त द्वारा काव्य गोष्ठी एवं प्रश्न मंच की प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें श्री हेमन्त पाण्डेय, सहायक कार्यपालक अभियन्ता (विद्युत) प्रथम स्थान पर श्री पान सिंह, भृत्य द्वितीय स्थान पर आए, 16 सितम्बर, 2009 को श्री संजय कुमार ओसवाल, उप निदेशक (प्रशासन) द्वारा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिसमें श्री आर.सी गायकवाड़ अ.श्रे.लि.एवं श्रीमती रंजना चौहान आशुलिपिक (संयुक्त रूप में) प्रथम स्थान पर, श्री हीरालाल वासवानी उ.श्रे.लि.एवं श्री दिवेन्दु सेन, अ.श्रे.लि. (संयुक्त रूप में) द्वितीय स्थान पर आए। 17 सितम्बर, 2009 को अहिंदी भाषियों के लिए रखी प्रतियोगिता में श्री वी.पी फुलम्ब्रीकर, उप निदेशक (पुर्नवास) द्वारा आयोजित की गई थी, प्रतियोगिता में श्री शिव चरण घोषाल, उप वित्त अधिकारी प्रथम एवं श्री पी.वी. वेणुगोपालन, निजी सचिव द्वितीय स्थान पर आए 18 सितम्बर, 2009 को श्री पवन कुमार, निदेशक (पर्यावरण) द्वारा

हिंदी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई थी जिसमें श्री राजेश रघुवंशी. अ.श्रे.लि. प्रथम, श्री अखिलेश शर्मा, सहायक अभियंता (विद्युत) द्वितीय स्थान पर आए। 22 सितम्बर, 2009 को श्री चंद्र शेखर श्रीवास्तव, मुख्य अभियंता द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई थी जिसमें प्रथम स्थान पर श्रीमती रंजना चौहान, आशुलिपिक एवं द्वितीय स्थान पर श्री पान सिंह, भृत्य आए और अन्त में 23 सितम्बर 09 को श्री ओ.पी सुमन, उप निदेशक (विद्युत), ऊर्जा प्रबंधन केंद्र द्वारा हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिसमें श्री देवेन्द्र सक्सेना, कार्यपालक अभियंता, प्रथम एवं श्री राजेश रघुवंशी, अ.श्रे.लि. द्वितीय स्थान पर आए। गठित की गई पाँच सदस्यीय हिंदी पखवाड़ा समिति में श्री नरेश लाल, निदेशक (सिविल), श्री संजय कुमार ओसवाल, उप निदेशक (प्रशासन), श्री रवींद्र बोबड़े, सहायक अभियंता (सिविल), श्री ओम प्रकाश वर्मा, हिंदी अनुवादक एवं श्रीमती अनिता पिंडारी, निजी सहायक नामित किए गए थे।

हिंदी पखवाड़े का पुरस्कार वितरण समारोह 8 अक्टूबर, 2009 को आयोजित किया गया था, श्री वी.के. ज्योति, कार्यकारी सदस्य महोदय के कर कमलो द्वारा पुरस्कृत अधिकारियों एवं कार्मचारियों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए गए थे।

पुरस्कार वितरण के इस सादगीपूर्ण एवं गरिमामय समारोह के दौरान न.नि.प्रा की विभागीय राजभाषा पत्रिका 'अनुभूति' के सातवें संस्करण का विमोचन भी श्री वी.के.ज्योति, कार्यकारी सदस्य, न.नि.प्रा. के कर कमलों द्वारा किया गया था। साथ ही प्राधिकरण में चलाई गई व्यवस्थाओं के अनुरूप कार्यालयीन कार्यों में सर्वाधिक टिप्पण एवं प्रारूप लेखन राजभाषा में करने पर चल वैजयंती पुरस्कार प्रशासन अनुभाग को प्रदान किया गया था। इस दौरान न.नि.प्रा. के वरिष्ठ अधिकारियों ने विजेताओं को बधाई देते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को यही सीख दी कि हमें अपने कर्त्तव्यों में सम्पूर्ण वर्ष ही कार्यालयीन कार्य अधिकाधिक हिंदी में करने की आदत डालनी चाहिए जिससें ना केवल गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राधिकरण प्राप्त करने मे सफल हो वरन् हम सब अपने संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करने में भी आत्मसंतोष का अनुभव करें।

नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका अनुभूति के छठे संस्करण को इन्दौर स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रथम पुरस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड प्रदान की गई, शील्ड श्री मुकेश चौहान, सचिव, न.नि.प्रा.एवं अध्यक्ष, कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 5 अक्टूबर, 2010 को नगर राजभाषा कार्यान्वय समिति की 50वीं समीक्षा बैठक में प्राप्त की गई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इन्दौर की ओर से आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं में से हिंदी निबंध प्रतियोगिता मे सुश्री उषा द्विवेदी, उप निदेशक (पर्यावरण), न.नि.प्रा. ने तृतीय पुरस्कार तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 51वीं समीक्षा बैठक के दौरान उक्त समिति के अध्यक्ष श्री.वी.डी. गुप्ता, निदेशक, राजा रामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र द्वारा निर्धारित राशि एवं प्रमाणपत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

प्राधिकरण में हिंदी पढ़ने की रूचि की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से न.नि.प्रा. में एक हिंदी पुस्तकालय भी स्थापित है। जो निदेशक (सिविल) की देखरेख में श्री ओम प्रकाश वर्मा, हिंदी अनुवादक द्वारा संचालित किया जा रहा है। जिसका लाभ नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी ले रहे है।

नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण द्वारा छः माह के अंतराल पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को एवं तीन माह के अंतराल पर जल संसाधन मंत्रालय के राजभाषा विभाग को उनके निर्धारित किए प्रपत्रों में भरकर नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण मे किए जा रहे हिंदी के कार्यों से सम्बन्धित आँकड़े एवं विभिन्न जानकारियाँ नियमित रूप से भेजी जा रही है।

प्राधिकरण के सभी कार्यालयों में इस वर्ष भी 14 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2010 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया, जिसके अन्तर्गत प्रश्न मंच, हिंदी व्याकरण एवं वर्तनी ज्ञान प्रतियोगिता अहिंदी भाषियों के लिए प्रतियोगिता, हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता, अनुविभागीय राजभाषा कार्यान्वयन अभियान प्रतियोगिता एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई है।

अनुभूति

इन्दौर- आज और कल

दिनेश कुमार जैन
निजी सहायक

आज इन्दौर, महानगर के रूप में विकसित होता जा रहा है। इन्दौर में वे सारी सुविधाएँ उपलब्ध हो रही हैं जो दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, बेंगलुरु जैसे महानगरों में उपलब्ध थी। आज इन्दौर में चाहे चिकित्सा के क्षेत्र में, विकास के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में और आय के क्षेत्र में सभी जगह इन्दौर महानगर के रूप में अपना अस्तित्व बदल रहा है। एक समय था जब इन्दौर की सड़कों पर चलते समय बार-बार पीछे मुड़कर देखना पड़ता था कि कोई पीछे आकर टक्कर न मार देंवे, किन्तु आज हर स्थान पर सीमेंट की चौड़ी सड़कों ने अपना जाल फैला दिया है। जिस ए.बी. रोड़ पर हमारे माता-पिता अगर हमें किसी कार्य से ए.बी. रोड पर जाना हो तो सौ बार कहते थे कि बेटा देखकर रोड़ पार करना। आज वही ए.बी. रोड़ 6 लेन का रोड़ बन रहा है और भारी वाहन के लिये नए रिंग रोड तथा उसके बाद बायपास का निर्माण हो चुका है। इसी प्रकार से पहले चिकित्सा के क्षेत्र में हम सिर्फ एम.वाय.एच. हॉस्पिटल पर अथवा चोइथराम हॉस्पिटल पर निर्भर रहते थे अथवा दिल्ली अथवा मुम्बई जाकर अपना इलाज करवाते थे, किन्तु आज समय पूर्ण रूप से बदल चुका है आज इन्दौर में बाम्बे हॉस्पिटल जैसे कितने ही बड़े-बड़े हॉस्पिटलों के निर्माण हो चुके हैं और अब हमें इन्दौर से बाहर जाकर इलाज करवाने की आवश्यकता बहुत ही कम हो गई है। उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी इन्दौर भारत का पहला ऐसा महानगर है जहाँ पर आय.आय.टी. तथा आय.आय.एम. दोनों की सुविधा उपलब्ध है। पहले इन्दौर के तथा म.प्र. के बच्चे उच्च शिक्षा हेतु जाते थे, किन्तु आज इन्दौर में बड़े-बड़े कोचिंग क्लासेस उपलब्ध हो रहे हैं और इन्दौर के अतिरिक्त इन्दौर के आसपास के अनेकों क्षेत्रों के बच्चे पूरे भारत में चाहे मेडिकल के क्षेत्र में अथवा इंजीनियरिंग के क्षेत्र में इन्दौर का नाम रोशन कर रहे हैं। इन्दौर में आज विकास के कार्य चलने के कारण मजदूरों को भरपूर रोजगार मिल रहा है और उन्हें रोजगार के रूप में मिलने वाला मानदेय भी अच्छा मिल रहा है। मजदूरों को अपने परिवार का पेट पालने में कोई दिक्कत नहीं आ रही है।

इन्दौर में विकास की गति काफी तीव्र है, यहाँ जो भी विकास चल रहे हैं वे दिल्ली, मुम्बई तथा बेंगलुरु जैसे महानगरों को देखकर ही विकास करवाए जा रहे हैं। आज जल, मल, रोड़, आवास, शिक्षा, व्यापार, विद्युत आदि ऐसी समस्त व्यवस्थाओं का विकास हो रहा है। आज यदि आपके परिवार का कोई व्यक्ति अथवा आपका रिश्तेदार यदि दस साल बाद इन्दौर आयेगा तो उसे आप तक पहुँचने में ऐसा प्रतीत होगा कि वह इन्दौर में है अथवा किसी महानगर में। आज इन्दौर में बड़े-बड़े शोरूम खुल चुके हैं एक ही स्थान पर अनेक बड़ी-बड़ी कम्पनी के सामान मिल जाएंगे। आपको पचास स्थान से सामान खरीदना नहीं पड़ेगा। आज इन्दौर पहले और अब में बहुत बदल गया है। विकास की इन्दौर में यदि यही रफ्तार रही तो आने वाले समय में इन्दौर विश्व के नक्शे पर अपनी एक अलग छाप छोड़ेगा।

वाणी परमात्मा प्रदत्त वह ताकत है, जिससे मानव अपने भाव तथा विचार व्यक्त करता है। भाषा विज्ञान की प्रक्रिया के अनुसार लेखन की दृष्टि से बोलियां जब धीरे-धीरे अधिक समृद्ध, सम्पन्न, समर्थ तथा सशक्त हो जाती है तब वे भाषा का रूप ग्रहण कर लेती है। बोली यदि क्षेत्रीयता का प्रतिनिधित्व करती है तो भाषा विशाल भू-भाग में प्रयुक्त की जाती है। आज लैटिन, हिब्रू, ग्रीक, संस्कृत, अरबी, फारसी, रूसी, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि भाषाएँ अपने प्रारंभिक रूप में बोली ही थी। बाद में तो वे महत्व प्राप्त करने तथा विपुल साहित्य होने पर भाषा का रूप ग्रहण किया। बोलियां जब-जब भाषा बनती हैं और अपनी सामर्थ्य से राष्ट्रभाषा बनती हैं, तब-तब उनका स्वरूप बड़ा व्यापक हो जाता है और वे राष्ट्र की वाणी ही बन जाती है।

बिन पानी सब सून

◖ रंजना सिंह चौहान
आशुलिपिक

प्रसिद्ध कवि रहीम ने बिना किसी लाग लपेट के पानी के बारे में कितनी महत्वपूर्ण बात कही हैं - रहीमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून, पानी गए न उबरे मोती, मानुष, चून। कहते है कि पानी है तो जीवन है, लेकिन इन दिनों पानी की कमी से सारी दुनिया त्राहि-त्राहि कर रही है। किंतु हमारे बीच अभी भी कुछ लोग ऐसे हैं जो पानी को बचाकर स्वयं और अपने आसपास के जीवन को संवारने में लगे हुए हैं। उनके इन सकारात्मक प्रयासों से हम सबको भी अपने-अपने स्तर पर इस कार्य मे जुटने की प्रेरणा मिल सकें इस उद्देश्य से मैं यह विषय वस्तु कुछ तथ्यो के साथ आपके सामने प्रस्तुत करने का प्रयास कर रही हूँ।

लगभग दो दशक पूर्व कार्टूनिस्ट देवेंद्र ने एक कार्टून बनाया था जिसमें गर्मी के मौसम में एक महिला दोनों हाथों से नल निचोड़ रही है और तब जाकर उसमें से दो बूंद पानी गिरता है। सच पूछा जाए तो यह कार्टून भी अब पुराना हो गया है। अब जल संकट के लिए गर्मी का इंतजार नहीं करना पड़ता। ठिठुरती ठंड में भी पानी का संकट सामने खड़ा मिल जाएगा। एक प्रसिद्ध पर्यावरणविद् के शब्दों में कहें तो कहा नहीं जा सकता कि देश में राजनीति का स्तर गिरा है या जल का स्तर। लगता है इन दोनों में एक-दूसरे से नीचे गिरने की होड़ सी लगी हुई है। हालांकि इस गिरते जलस्तर के दोषी हम ही है और इस बात को गम्भीरता से लेते हुए हम इसके स्तर को सुधारने के लिए अभी से कार्य शुरू कर देना चाहिए। एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग सभी महानगरों में पानी की माँग और आपूर्ति में करीब 30 से 40 प्रतिशत तक का अन्तर है और इसका सबसे बड़ा कारण है पानी की बर्बादी। रिपोर्ट के मुताबिक महानगरों को जो पानी दिया जाता है उसका अस्सी प्रतिशत नालियों के जरिए बर्बाद हो जाता है। इस बर्बाद हो रहे पानी को फिर से उपयोग में लाने लायक बनाने का बीड़ा फिलहाल एक निजी कम्पनी ने उठाया है। यदि आजकल बन रहे हर निजी टाऊनशिप या सरकारी हाउसिंग सोसायटी में वाटर साइकिलिंग प्लांट लगाया जाए तो हर सोसायटी में हर साल लगभग 55 हजार क्यूबिक मीटर पानी की बचत होगी और एक क्यूबिक मीटर (लगभग 50 से 60 बाल्टी पानी) पर लगभग ग्यारह रुपये का खर्च आएगा।

हमारे देश में चेरापूंजी से लेकर जैसलमेर जैसे इलाके है, जहाँ चेरापूंजी में औसतन 450 इंच पानी गिरता है वहीं जैसलमेर में साल भर में आठ-नौ इंच पानी गिर जाए जो प्रकृति की कृपा मानी जाती है। एक पर्यावरणविद् के अनुसार यहाँ के समाजों ने अपने हिस्से में गिरने वाली एक-एक बूंद पानी बचाने के लिए पूरी ईमानदारी से स्टेट ऑफ आर्ट और सामयिक उपाय निकाले हैं। स्टेट ऑफ आर्ट यानी जिनका बनाने में बाहरी दिमाग, पैसे और मदद की जरुरत नहीं पड़ती और सामयिक या टाईम टेस्टेड का मतलब है जो लम्बी अवधि तक- कई दशकों तक निर्बाध रुप से लोगों की सिंचाई और पीने के पानी संबंधी आवश्यकताओं को पूर्ण करती रहे। ऐसे उपायों में तालाब, कुंड, बावड़ी, जैसे स्त्रोत रहे हैं और साथ ही प्रकृति की तरफ से दिया गया नदियों का वरदान। निःसन्देह पिछले दो सौ बरसों में एक ऐसा दौर आया जब इन उपायों को हमने नजरअंदाज करना शुरु कर दिया और उनकी जगह नई मंहगी परियोजनाओं ने ले ली। लेकिन आज ये नए तरीके न शहर की प्यास बुझा पा रहे है, न गाँव की।

जल संकट से निपटने के ये सफल तरीके हिमालय से कन्याकुमारी तक हर जगह मिल जाएंगे। हिमालय के पश्चिम कोने में उत्तराखंड के एक गाँव के लोगों ने दूधातोली लोक विकास संस्थान की मदद से अपने यहाँ के चालों (छोटे तालाब) को फिर से बनाने का अभियान कोई पंद्रह बरस पहले शुरु किया था। आज उस इलाके में ऐसी बीस हजार चालें न सिर्फ पानी की जरुरत पूरी कर रही हैं, बल्कि इससे फैली नमी के कारण ईंधन और चारा भी आसानी से उपलब्ध होने लगा है।

इसी तरह दक्षिण बिहार में एक संगठन ढाई हजार साल पुरानी प्रणाली (आहर पाइन पद्धति) को लोगों के सहयोग से फिर से जीवित कर रही है। पानी की कमी के लिए सबसे ज्यादा याद किए जाने वाला राजस्थान भी अब फिर से पानी के अपने पुराने स्रोतों को सहेज कर एक नया जीवन देने की तैयारी में खड़ा है। जैसलमेर जिले में देश

की सबसे कम वर्षा (औसतन 6 से 8 इंच) होती है। लेकिन जिन गाँवों ने अपनी कुईं, बेरी, कुआँ और तालाब फिर से सुधारे हैं, आज उन इलाकों में ऐसे समय में भी पानी का संकट बहुत कम हो गया है। राजस्थान के ही सवाई माधोपुर जिले की पहाड़ी पर बसा गाँव खरकाली पहले पानी की कमी के चलते गर्मियों में सूना हो जाता था और लोग गाँव छोड़कर मैदानी इलाकों में जीवनयापन हेतु चले जाते थे। अब यहां तरुण भरत संघ नाम के जागरुक गैरसरकारी संगठन के सक्रिय सहयोग से लोगों ने पानी रोकने के लिए रोक बांध (स्टॉप डेम) और छोटे तालाब बनाकर वैकल्पिक व्यवस्था कर ली है। मेवात जिले के ग्राम भौड़ के भूरे खां ने तो पचासी साल की उम्र में पहाड़ी का सीना चीरकर तीन तालाब ही बना दिए, चौदह साल की उम्र से चरवाहे का काम कर रहे इस व्यक्ति को पेड़-पौधों और जानवरों से विशेष प्यार है और मेवात की बंजर जमीन पर उनसे उनकी प्यास देखी नहीं गई। बस फिर क्या था, अपनी जिद और जुनून में उन्होंने अपने गाँव में तालाब ही खोद डाले जो अब बारिश के बाद के दिनों में भी पानी से भरे रहते है। पानी के मामलें में गुजरात ने भी कई अनोखी मिसालें कायम की हैं। सौराष्ट्र जिले के श्यामजी भाई अंटाला ने बीते दो दशकों से गुजरात में सूखे कुओं को रिचार्ज करने की मुहिम छेड़ रखी है। अब तक वे राज्य के करीब तीन लाख से ज्यादा कुएं रिचार्ज करा चुके हैं उनके इन प्रयासों की बदौलत ही भावनगर जिले के सूखाग्रस्त गाँव के लोगों ने अपने दम पर छोटे रोक बाँध बनाकर पानी बचाने की एक अनोखी मिशाल कायम की सौराष्ट्र में आज से 4-5 दशक पूर्व कुआं रिचार्ज करने का जो अभियान शुरु किया गया था वह आज अपने शिखर पर है। इसी तरह सावरकुंडला तालुका का भेंकरा एक ऐसा गाँव है जहां 24 साल पहले यहाँ के भगवानभाई ने एक छोटे से नाले को मिट्टी-पत्थर डालकर रोका था। जाहिर है कि प्रकृति बहुत उदार है, वह हर साल हमें पानी देती है। यदि हम उसे बहने न दें- तालाबों, कुओं आदि में रोककर रखें, अपनी कॉलोनी और आसपास के नलों से बारिश के दौरान रिचार्जिंग की व्यवस्था करें तो लगातार गिरता जलस्तर कुछ ही वर्षों में न सिर्फ संभल लाएगा बल्कि आने वाले दौर में तेजी से उठ भी सकता है। आज गिरती राजनीति का स्तर तो उठाना ही चाहिए लेकिन गिरा हुआ जलस्तर नहीं उठा तो हम सबका जीवन एक कठिन दौर में फंस जाएगा।

आने वाली पुश्तों का,
कुछ तो हम करें ख्याल
पानी के बगैर भविष्य
भला कैसे होगा खुशहाल
बच्चे, बूढे और जवान
पानी बचाएँ बने महान
अब तो जाग जाओ इंसान
पानी में बसते है प्राण।

हिंदी एक जीवंत भाषा है। इसमें बड़ी सुरम्यता और उदारता है। हिंदी के यही तो वे गुण है जो इसे दूसरी भाषाओं के शब्दों और वाक्यों को आत्मसात करने की असीम क्षमता प्रदान करते हैं। हिंदी हमें दक्षिण एशिया के देशों से ही नहीं बल्कि पूरे एशिया और मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, ट्रिनीडाड व टोबेगो जैसे अन्य देशों के साथ भी जोड़ती है। यदि हिंदी को विश्व की एक प्रमुख भाषा बनाना है तो इसे आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का माध्यम बनाना होगा।

- भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन

हिन्दी क्यों नही

संकलित श्रीमती वैशाली सांगलीकर
आशुलिपिक

अक्सर जब हम देशप्रेम या साहित्य की बात करते है तो अंग्रेजी में बोलते और समझते हैं कि बहुत अच्छा और बड़ा काम कर रहे हैं। हमारे देश के कुछ बुद्धिजीवी कहते हैं कि हिंदी भाषा विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम नहीं है और इसीलिए इसका व्यापक उपयोग नहीं हो सकता। इस बयान से उनकी हिंदी के प्रति निराशा और हीनभावना ही झलकती है। किसी भी भाषा का कितना अच्छा और व्यापक प्रयोग हो सकता है यह उस भाषा पर नहीं उस भाषा के जानने वालों पर निर्भर करता है। अगर हम अपनी राष्ट्रभाषा को पढ-लिख, समझ कर उसका व्यापक उपयोग नहीं कर सकते तो यह भाषा का नहीं हमारा दोष है।

विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी तीसरे स्थान पर है फिर भी साहित्यिक और शैक्षिक महत्व में इसका स्थान फ्रेंच, जर्मन और जापानी भाषाओं से बहुत नीचे है जिनके बोलने वाले हिन्दी की तुलना में बहुत कम हैं।

हिन्दी भारत, नेपाल, इन्डोनेशिया, मलेशिया, सूरीनाम, फिजी, गुयाना, मारिशस, ट्रिनिडाड, टोबेगो, अरब अमीरात जैसे अनेक देशों में बोली जाती है फिर भी विडम्बना यह है कि आज तक इसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा नहीं मिल पाया है। इसका प्रमुख कारण भारतीयों में संकल्प की कमी है। अगर हम अपनी भाषा को अपने ही घर में ही नहीं बोल सकते तो इसे विश्व भाषा का दर्जा कैसे दिलवायेंगे।

इस संदर्भ में फ्रांसीसी लोगों से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे अपनी मातृभाषा से प्रेम करते हैं और बडी मेहनत से विश्व भर में उसका प्रचार भी करते हैं। उनके यहाँ फ्रेंच के विकास के लिए एक मंत्री अलग से होता है जिसे फ्रांकोफान मिनिस्टर कहते हैं।

हम इजराइल जैसे छोटे और नए देश को देंखे। वर्ष1948 में जब वह स्वतंत्र हुआ था वहाँ उनकी मातृभाषा हिब्रू के जानने वाले बहुत कम थे। उन्होंने एक सुनियोजित कार्यक्रम के तहत काम करना शुरू किया और वर्ष 1995 तक उन्होंने अपनी भाषा का इतना विकास कर लिया कि उच्च शिक्षा तक में इसका प्रयोग हो सके।

आज तक हम अपने देश में हिन्दी में उच्च शिक्षा का प्रबंध नही कर सके हैं। हमारे गाँवो के अधिकांश बच्चे आज भी मेडिकल कॉलेजों और इंजीनियरिंग कॉलेजों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सपना नहीं देख सकते हैं क्योंकि इनमें शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है, इस प्रकार न केवल हम अपने देश की जनता के एक बड़े वर्ग को उच्च शिक्षित होने से रोकते हैं बल्कि अपने देश की उन्नति में बाधा भी खड़ी करते है। चीन, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों के विकास का कारण यह है कि उनके देश में शिक्षा का माध्यम उनकी अपनी भाषा है। उनके देश के विद्यार्थियों को अपना बहुमूल्य समय और मानसिक शक्ति एक विदेशी भाषा सीखने में व्यय नहीं करनी पड़ती।

विख्यात वैज्ञानिक जयन्त नारलीकर, जिन्होंने हिन्दी में अनेक उपयोगी पुस्तकें लिखी हैं, का मानना है कि 'वैज्ञानिक शोध में एक स्थिति वह आती है जब विदेशी भाषा अपर्याप्त साबित होती है। तब हमें मातृभाषा को ही अपनाना पड़ता है।' सच तो यह है कि ऐसे समाज में जहां भाषा और विज्ञान का आपसी संबंध प्रगाढ न हो विज्ञान में मौलिकता का विकास हो ही नहीं सकता। रूस, चीन, जापान, फ्रांस और जर्मनी आदि देशों ने अपनी मातृभाषा और वैज्ञानिक विकास के बीच एक क्रमबद्ध तालमेल विकसित किया, जिसके कारण इन देशों का तेजी से विकास हुआ। हिन्दी में हमें इसी तरह के एक विकास आंदोलन की आवश्यकता है।

भाषा केवल शिक्षा का माध्यम ही नहीं होती यह संस्कृति का माध्यम भी होती है। अंग्रेजी का अंधानुकरण हमें असंगत जीवन शैली की ओर ले जाता है। इस प्रकार हम सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का सीधा शिकार होते हैं। जिन भारतीय मूल्यों के लिए शहीदों ने प्राणों की बाजी लगा कर स्वराज हमें सौंपा था आज विदेशी भाषा और संस्कृति के प्रेम में वे भारतीय मूल्य हमें फिर खतरे में डाल रहे हैं।

हमें केन्या के उपन्यासकार नागुगी व थवांगो का अनुकरण करना चाहिए जिन्होंने अंग्रेजी में लिखना बंद कर के गिकुमु और स्वाहिली जैसी अफ्रीकी भाषाओं में लिखना शुरू कर दिया है। उनका कहना है कि ''एक लेखक का यह मानना कि यूरोपीय भाषा के बिना अफ्रीका नहीं चल सकता उसी प्रकार है जैसे एक राजनीतिज्ञ कहे कि बिना विदेशी शासन के अफ्रीका नहीं चल सकता।''

हिन्दी हर प्रकार से एक सशक्त और सम्पन्न भाषा है। हमे भारत एवं भारतीय संस्कृति के विकास के लिए और हमारे सांस्कृतिक मूल्यों के विकास के लिये हिन्दी बोलने, लिखने, पढने और प्रत्येक क्षेत्रों में विकास करने की आवश्यकता है।

उपयोगी विचार

सुदेश पाल
अवर श्रेणी लिपिक

- दृष्टि को शीतल, मन को निर्मल और मुख को मृदुल बनाओं।
- जहाँ एकता और एकाग्रता की शक्ति है, वहाँ सफलता सहज प्राप्त होती है।
- नैतिकता सर्वश्रेष्ठ बल है।
- रोते हुए को हंसाना एवं गिरे हुए को उठाना, यही सच्ची मानवता है।
- स्वार्थ मनुष्य को पतनगामी बनाता है और परमार्थ मनुष्य को देवत्व दिलाता है।
- हर कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चय, स्वच्छ ह्रदय और पूर्ण उत्साह को अपनाओं।
- कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो, सोच-समझकर बोलो।
- वही कार्य श्रेष्ठ है जिसमें बहुसंख्यक लोगों को अधिक से अधिक आनंद की प्राप्ति हो सके।
- विश्व के शुभ परिवर्तन की क्रांति विज्ञान से नही, उत्तम विचारधारा से आयेगी।
- सच्चे दिल के स्नेह से आप परमात्मा को भी अपना बना सकते हो।
- अपने आप को अभिमान से मुक्त रखना भी पुण्य कर्म है।
- परीक्षा की घड़ी मनुष्य को महान बनाती हे, विजय की घड़ी नही।
- मन को मारना नहीं, सुधारना है।
- स्वयं की उन्नति में अधिक समय दोगे, तो दूसरो की निंदा करने का समय नहीं मिलेगा।
- जिस प्रकार एक खिलाड़ी अपनी तीव्र लगन, अटूट शक्ति आदि के द्वारा चैम्पियन बनता है उसी प्रकार इस चुनौतीपूर्ण जीवन में अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए श्रेष्ठ लक्ष्य, सही दिशा, अथक प्रयास, तीव्र पुरूषार्थ और शक्तियों की आवश्यकता होती है, जो ईश्वरीय स्मृति से सहज ही प्राप्त होती है।

यदि एक भाषा के न होने के कारण भारत में एकता नहीं होती है तो और चारा ही क्या है ? तब सारे भारतवर्ष में एक भाषा का व्यवहार करना ही एकमात्र उपाय है। अभी कितनी ही भाषाएँ भारत में प्रचलित है। इसी हिंदी को यदि भारतवर्ष की एकमात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाए तो सहज ही में यह (एकता) सम्पन्न हो सकती है।

-केशवचन्द्र सेन

सुलभ समाचार, 187, भा.सं.स.स.रि. 13.9.1949

अनुभूति

प्रशासक

◖ हीरालाल वासवानी
उच्च श्रेणी लिपिक

मैं जब अपने कार्यालय में प्रशासक को कार्य करते हुए देखता हूँ तो मेरा मन कल्पना के पंख लगाकर उड़ने लगता है तथा स्वयं को सपनों में इस कार्यालय का प्रशासक समझने लगता हूँ। मैं सोचने लगता हूँ कि जितना आदर, प्यार, मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा उन्होंने अर्जित की है क्या मैं कर पाऊंगा ? कार्यालय प्रशासक अत्यन्त परिश्रमी, सकारात्मक सोच के धनी, धैर्यवान तथा कर्तव्य व अधिकारों को समान रूप में रखने वाले सफल माने जाते है। इस संसार में मन की इच्छा पूरी होना हर मनुष्य के बस की बात नहीं है। फिर भी मेरे अपने विचार में कम से कम हर मनुष्य दो प्रकार के कार्य तो कर ही सकता है। यह कि प्रत्येक व्यक्ति जो बनना चाहता है, उसके लिए लगातार परिश्रम करता रहे। कहते है कि लगातार चलते रहने वाला व्यक्ति कहीं न कहीं पहुंच ही जाया करता है। दूसरे, यह कि सही इच्छा के अनुरूप न बन पाना, सुखद सपना देखना तो प्रत्येक व्यक्ति के अपने हाथ में है ही, उस पर किसी दूसरे का किसी तरह का कोई प्रतिबंध नहीं है। सपनों और कल्पनाओं की राह में किसी तरह की बाधाओं का भी कोई प्रत्यक्ष महत्व नही हुआ करता है।

एक प्रशासक में निम्नलिखित क्षमताओं का समावेश हो तो वह सफल प्रशासक कहलाएगा :

1. एक सफल कार्यालय प्रशासक के लिए यह परम आवश्यक है कि वो कार्यालय के समस्त अधिकारियों/ कर्मचारियों को ‘सर्वधर्म समभाव’ से सबके हितों का ध्यान रखें।
2. कार्यालय के सामने ऐसा उच्च आदर्श प्रस्तुत करे कि सभी उनके आर्दशों पर चलें।
3. कार्यालय का जो मुख्य कार्य एवं उद्देश्य है, उस पर पूर्ण रूप से ध्यान केन्द्रित कर कार्य करना चाहिए।
4. प्रत्येक माह अधिकारियों/कर्मचारियों के कार्यकलापों सम्बन्धी मूल्यांकन करते हुए बैठक लें, उनको योग्यतानुसार कार्य विभाजन करें व समय-समय पर एक ही स्थान पर न रखते हुए उन्हें स्थानान्तरित करते रहना चाहिए जिससे उनको कार्यालय के सभी विभागों, अनुभागों, विंग के कार्यों का अनुभव हो तथा इससे उनकी शिकायतों को भी रोका जा सकेगा।
5. अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहित करते हुए नियमानुसार पदलाभ देकर उनकी प्रतिभा को निखारना चाहिए। जिससे वे कार्यालयीन कार्य कर्तव्यनिष्ठापूर्वक सम्पन्न कर सकें।
6. कार्यालय में आने व जाने के समय को कठोरता से लागू करवाना।
7. कार्यालय में प्रयुक्त वाहनों को एक ही शाखा के अधिकार में रखते हुए उसकी सतत् मानीटरिंग करना, जिससे वाहनों का अनाधिकृत रूप से दुरूपयोग न हो, यह इसीलिए कि किसी अधिकारी के पास वाहन हो और किसी के पास नहीं तो यह उचित प्रतीत नहीं होता, अन्य अधिकारियों को समभाव नहीं दिखेगा व होने वाले निरर्थक व्ययों में भी भारी कटौती होगी।
8. कार्यालय के समस्त अनुभागों का एक ही प्रशासक या सक्षम अधिकारी होना चाहिए, जितने ज्यादा सक्षम अधिकारी होंगे उससे कार्य की उचित मानीटरिंग नहीं हो पाएगी, उन सभी के अपने विचार होंगे जो कभी भी समान नहीं होने से कार्यालयीन कार्य प्रभावित होते रहेंगे।
9. कार्यालय की ओर से होने वाली अनावश्यक बैठकों को न होने देना व अति आवश्यक बैठकों को यथासंभव स्थानीय कार्यालय में आयोजित करते हुए व्ययों में कमी करना।
10. कार्यालय के अधिकारियों द्वारा किये जाने वाले अनावश्यक दौरों में कटौती करना।

3. कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच पूर्ण

सामंजस्य स्थापित करना व उनकी समस्याओं के निदान हेतु सदैव प्रयत्नशील रहना।

12. कार्यालय के भविष्य को ध्यान में रखते हुए होने वाले अविवेकपूर्ण/ अत्यधिक व्ययों को धीरे-धीरे कम करने के प्रयास करना व ऐसी योजना बनाई जाना कि सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों के परिवारों का भी भविष्य सुरक्षित हो सके।

13. कर्मचारी की समस्याओं को धैर्य पूर्वक सुनकर उनके साथ न्याय करना।

मुझे विश्वास है कि इन सभी प्रमुख बिन्दुओं पर कार्य करने से कार्यालय का भविष्य उज्ज्वल हो सकेगा तथा विकास संभव होगा व समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ उनके परिवारों का भी भविष्य सुनिश्चित व सुरक्षित रहेगा।

मात्र उपभोगवादी संस्कृति ही क्यों ?

पान सिंह
भृत्य

आज का युग कलयुग के साथ-साथ भोग-उपभोग का युग भी है। आजकल लोगों के लिए अधिक से अधिक उपभोग करना ही उनका सुख है। आज सारे संसार को उपभोगवादी संस्कृति ने जकड़ रखा है। आज प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह नए जमाने में रहे और आज का जमाना सिर्फ नए फैशन में जीना ही नहीं है बल्कि दिखावा करना भी नए जमाने में ही आने लगा है। आज जो व्यक्ति दिखावा नहीं करता उसे लोग बेकार कहते है। आज मनुष्य अपने बदन के कपड़े भी बदन ढ़कने के लिए नहीं बल्कि दिखावे के लिए खरीदते हैं वो भी पाश्चात्य संस्कृति के होने चाहिए। उपभोगवादी संस्कृति ने हमारी भारतीय संस्कृति की नींव हिला दी है। लोग अपनी संस्कृति को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं, और तो और आज हम संगीत भी हिन्दी के बजाय अंग्रेजी में सुनना पसन्द कर रहे है और आज का युवा कर्ज करके मोटर साईकिल न जाने क्या-क्या खरीद रहा है न चुका पाए तो नरक के लिए भी उसने अपना रास्ता बना लिया है। चोरी, डकैती अगवा जैसे कार्य करना शुरु कर दिया है। रामायण, गीता, कुरान व बाइबिल से जुड़ी भारतीय संस्कृति को अपनाने के बजाय पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने वाले लोगों से मेरा निवेदन है कि अधिक उपभोगवादी संस्कृति को भूलें और भारतीय संस्कृति का अपने जीवन में उतारें।

''हिंदी को राष्ट्रीय भाषा स्वीकार करने में अन्य प्रान्तों की भाषा के सम्बन्ध में कोई अपमान की भावना या ईर्ष्यालु भावना नहीं है। हमें अपनी प्रान्तीय भाषाओं से भी उतना ही प्रेम है जितना कि हिंदी से। ये सब भाषाएँ अपने-अपने क्षेत्र में उन्नत होती रहेंगी। वास्तव में कुछ प्रान्तीय भाषाएँ हिंदी की अपेक्षा अधिक सम्पन्न हैं, परन्तु फिर भी हिंदी अखिल हिन्दुत्व की राष्ट्रभाषा होने के लिए सब प्रकार से सर्वश्रेष्ठ है।''

-विनायक दामोदर सावरकर

सावरकर, विनायक दामोदर : हमारी समस्याएँ, पृ. 30

भाषायी कंप्यूटरीकरण : एकमात्र विकल्प यूनिकोड

यूनिकोड मानक सार्विक करैक्टर इनकोडिंग मानक है जिसका प्रयोग कंप्यूटर प्रोसेसिंग के लिए टेक्स्ट के निरूपण के लिए किया जाता है। कंप्यूटर पर एकरूपता के लिए एकमात्र विकल्प कैरेक्टर इनकोडिंग के लिए यूनिकोड है। यह अंतर्राष्ट्रीय मानक है। इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से 100% कार्य किया जा सकता है, कंप्यूटर पर हिंदी में सभी कार्य जैसे-वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई-मेल, वैबसाइट निर्माण आदि किए जा सकते हैं, हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान तथा हिंदी की-वर्ड पर गूगल या किसी अन्य सर्च इंजन में सर्च कर सकते हैं।

यूनिकोड सक्रिय करने की प्रक्रिया

(क) विंडोज एक्सपी में Indic Languages सक्रिय करने के लिए

Go to **Start->Control Panel>Regional & Language Options>**Click on **Languages Tab**

Tick the Check box to **Install files for complex scripts... and click OK.**

You will be required to place the Windows XP CD in the CD drive to enable indic languages including Hindi

(हिंदी Indic IME 2 इंस्टाल करने के लिए (हिंदी की-बोर्ड ले-आउट सक्रिय करने के लिए)

http://bhashaindia.com साइट पर जाए

- Click on Downloads>>Indic IME 2>> Indic IME 2 (Hindi 32 bit)
- A zip file will be downloaded.
- Unzip the folder and Run or double click Hindi Indic Input 2 setup. Once the installation process is complete, Hindi Indic input 2 has been successfully installed will be displayed.

विंडोज एक्सपी के लिए अतिरिक्त सैटिंग्स

विंडोज एक्सपी में Hindi Indic Input 2 को सभी अनुप्रयोग सॉफ्टवेयरों के लिए सक्रिय करना

Once installed on Windows XP, Indic Input Tool Works on all MS Office applications. To enable it on other applications follows these steps.

1. Go to Control Panel>> Regional and Language Options>>Languages
2. Select Details tab and then "Advanced" tab.
3. Select checkbox Extend support of advanced text services to all programs and click OK
4. You may be prompted to re-start the computer.

(ख) विंडोज विस्टा तथा विंडोज 7 में हिंदी Indic IME 2 इंस्टाल करने के लिए (हिंदी की-बोर्ड ले-आउट सक्रिय करने के लिए)

http://bhashaindia.com साइट पर जाए

- Click on Downloads>>Indic IME 2>> Indic IME 2 (Hindi 32 bit)
- A zip file will be downloaded.
- Unzip the folder and Run or double click Hindi IME Input 2 setup. Once the installation process is complete, Hindi Indic input 2 has been successfully installed will be displayed.

Note : On Windows Vista and Windows 7, if your user login does not have administrative privileges or it is not included in the user group of administrators right click the "Setup.exe" icon and select "Run as Administrator".

यूनिकोड सक्रिय करने की प्रक्रिया (हिंदी तथा अंग्रेजी वर्जन) आप राजभाषा विभाग की साइट http://rajbhasha.gov.in के मेन पेज से कंप्यूटर में भाषा को सक्रिय कैसे करें ? या How to enable Language in Computer? पर क्लिक करके ले सकते हैं।

उपरोक्त विधि के बाद हिंदी में कंप्यूटर प्रयोग के लिए उपलब्ध है तथा निम्न विधि से हिंदी में कार्य प्रारंभ करें।

Start the Office application.

From the System tray Click on EN or Press Keyboard's left side ALT+Shift to toggle between EN (English) and HI (Hindi)

Select Hindi Input 2 from the shortcut menu that appears.

The PC is now ready to start typing in Hindi, Select Keyboard of your Choice.

संकलित : राजभाषा भारती, त्रैमासिकी से

पर्यावरण अध्ययन

जीव जंतु के गिरते स्तर का
कारण खोजना शुरु किया,
पौधों का कारण जल की कमी
व पेड़ों की मनुष्य द्वारा कटाई है
जंतु कम हो रहे है,
और विलुप्त डायनॉसोर की खोज जारी है,
कारण कि मनुष्य जंतुओं से
अधिक खतरनाक होता जा रहा है
वन्य जीवों हेतु अधिनियम 1972 है
पर मनुष्यों के लिए डोमेस्टिक
वायलेंस एक्ट बनाना पड़ा
प्राकृतिक जंतु की क्या
आवश्यकता बची है ?

महिला विधेयक

उषा द्विवेदी
उप निदेशक (पर्यावरण)

महिला विधेयक पर हो गई बहस,
महिला की स्थिति क्या हो गई है सहज,
क्या महिला का सम्मान
प्रतिशत तक ही सीमित है ?
नहीं जब तक हम महिला को सम्मान की,
नजर से नहीं देखेंगे, हर माँ, बहन, पत्नी में
एक अबला को पाएगे, रोज नई दहेज हत्या,
अत्याचार पाएगे, समय है नारी को,
पूजित करने का,
और एक नया इतिहास रचने का

पानी का महत्व

सेफुद्दीन हैदर अली आसिफ
उप निदेशक (पुनर्वास)

पानी तो अनमोल हैं इसे बचा कर रखिए
बर्बाद मत कीजिए इसे जीने का सलीका सीखिए।

पानी को तरसते है, धरती पे काफी लोग यहाँ
पानी ही तो दौलत है, पानी सा धन भला कहाँ

पानी की है मात्रा अधिक, पर पीने का पानी है सीमित
तो पानी को बचाइए, उसी में है समृद्धि नीहित

शेविंग या कार की धुलाई, या जब करते हो स्नान
पानी की जरूर बचत करे, पानी से धरती महान

जल है तो जीवन है, पानी हैं गुणो की खान
पानी ही तो सब कुछ है, पानी है धरती की शान

पर्यावरण को न बचाया गया, तो वो दिन जल्दी ही आएगा
जब धरती पे हर इंसान, बस पानी-पानी चिल्लाएगा

रूपये, पैसे धन दौलत, कुछ भी काम न आएगा
यदि इंसान इसी तरह, धरती को नोच के खाएगा

आने वाली पुश्तो का, कुछ तो हम करे ख्याल
पानी के बगैर भविष्य, भला कैसे होगा खुशहाल

बच्चे, बूढ़े और जवान, पानी बचाएँ बने महान
अब तो जाग जाओ इंसान, पानी में बसते है हम सबके प्राण

रूक जा रे ओ सांझ के बादल

संकलित ◖ **चंद्रहास शर्मा**
उप निदेशक (जलविज्ञान)
(लेखक **स्व. पं. श्री हरिशंकर शर्मा**)

ना-ना रे बादल अभी ना जा रे,
बाद मास बारह आया है मोरे अंगना रे ।।
पपीहे की पियू की रटन व मोर की मनोरम सी थिरकन पर
तुम भी बैचेन हो इन्द्रपुरी छोड़, छा जाते हो वसुधा पर ।।
इस अनुपम प्रणय के स्वागत में जब पावन प्रकृति भी ।
ग्रीष्म की तपन को भुलाकर घटाओं की बौछार में उन्मत्त हो ।।
ओढ हरी चूनर इन्द्रधनुषी सा लंहगा पहिनकर ।
यौवन के बोझ में रहती है बेसुध अपनी ही धुन में ।
कौन जाने पिय को लुभाती है या मानव प्रकृति को ।
अंतरंगी सीख देत पैदा करत है हिय की तरंग को ।
आज मेरे मानस में पैदा हुई उत्पीड़न सी रूठी हुई तनहाई से
कष्ट को क्षमा कर प्रिया का संदेश ला मेरे अनुरोध से ।
मेरी प्रियतमा जो, बीत गया चौमास एक
मुझ से बिछुड़कर गई दूर नैहर
विलग होत समय तो अंत था बसंत का
किन्तु अब आगम है मेघ के मल्हार का
मदमाती इस बेला में मन-मीणा के नाजुक से तार खनके
मीठी सी धड़कन ने राग छेड़ा हृदय की तलहटी में याद बनके।
ऐसे में घटा उठन पवन चलत झींम-झींम
नन्ही सी बुंदिया नाचत है अंगना में
मिट्टी की सोंधी सी गंध में मेरा मन-मयूर भी
नाचत उन्मत्त हो चाहत है होती निकट मेरी प्रिया भी
किन्तु मै बेबस असमर्थ हो नाहि पहुँच पावत पास
कारण कि मैं तो बसत शिवनाथ तीर
प्रिया बसत नदी तीर बेतवा जो बहत बीच मालवा
सोचता हूँ ऐसे में प्रिया को और नहीं पाती तो भेज दूं
पर गाड़ी भी ऐसी निठुर रहित पीर है
कि पाती उस प्रिया की भेजत दिन तीन में
ग्रीष्म चौमास भर साथ तपा प्रकृति के
और दूनी तपन बढ़ी है हृदय में प्रिया के विरह से
बादल अहसानमंद फुहार लाए पवन लाए पुरवाई
प्रकृति ने अनुपम संगीत छेड़ा, मौसम ने ली मन भावन अंगड़ाई
बादलों के ढोल ने बिजली की ठनक ने लौटते चरवाहे की वंशी की ध्वनि ने
पावन से नन्हें से मनवा में प्रिया की सुनहरी सी याद छेड़ी
व्यथित मन की वेदना तुझसे कहू हे मीत बादल रे
बनकर मेरे शुभ सतिए पास जा मेरी प्रिया के
नन्हें से फूल से चंद्र और उर्मि भी, जो मेरे हृदय के दो टुकड़े
होगे निकट मेरी प्रिया के सब को आशीष देना मेरा स्नेह कहना
ना-ना, रे बादल अभी ना जा रे
बिना पता जाने में संभव है राह से भटक जाना
विन्ध्य पर्वत के निकट प्राचीन साँची का उत्तुंग शिखर है
जहाँ राजा अशोक ने बुद्ध से शांति का पाठ सीखा
उस पावन स्थल से पूर्व की दिशा में दूरी छः मील पर
नदी तीर बेतवा नगरी है विदिशा तुम वहाँ चले जाना
मंजिल तय करने में पवन वेग जाने में सम्भव है थक जाना
नगरी के मध्य ऊँची सी टौरी है नाम है लुहांगी टौरी
वहाँ पहुँचकर विश्राम करना, थकान को मिटा लेना
प्रातः की सुनहरी सी बेला में टौरी के शिखर पर खड़े होना
मुझ जैसे विरहियों पर तरस खाकर ठंडी सी फुहार देना
ऐसे में तृप्त होकर मन की थकान खोकर विरही आशीष देंगे
वहीं से निहारना नगरी के कोने में एक नीमताल है
ताल से थोड़ी ही दूरी पर कमनीय प्रिया के नैहर का घर है
वहाँ पहुंचकर बताना मैं कुशल हूँ बस संताप है तेरे विरह की
पीड़ित कुछ मन है सुचि तरंग आवन है तेरे डगर की
लेकर खबर मीत दूनी गति से बहुरना रे ।
बन जाए तो बदली संग प्रिया को भी लाना रे ।।
ना-ना, रे बादल अभी ना जाना रे .....

भोला वोटर

◖ राजेश सेन
आशुलिपिक

पूरे देश में फसल स्वप्न की, कैसी हरियाई है।
दिवस हजारों बीते देखो अब याद वोटर की आई है ॥

पूर्ण देश में सपनों के विक्रेता ऐसे घूम रहे।
गाँव-गली में घूम-घूम कर बूढ़े बच्चों को चूम रहे ॥

सपने कोई कर्ज माफी के, सपने कोई बिजली पानी के।
सपने कोई कन्या की शादी के, सस्ते चावल धानी के ॥

नेता अब विपणन में माहिर सपने सुनहरे दिखा रहा।
भोला वोटर इन सपनों को निज मन में है सजा रहा ॥

मिलने आए सांसद से भूखा सड़क पर पड़ा रहा।
आज उसी के घर के आगे, नेता का वाहन खड़ा ॥

गाँव को लौटा जो भूखा, किंतु जो सांसद से मिल नहीं पाया
आज उसी के घर में, उस सांसद ने भोजन खाया ॥

फिर अखबार में फोटों अपना देख बेचारा भरमाया।
कष्ट पुराने विस्मृत किए सारे, नेता चरण में भोले वोटर की जब से

ठगा गया वोटर इसी प्रकार सदा, अपना अधिकार वो लुटाता आया।
नेता मिथ्या स्वप्न बेचकर, अपना व्यापार चलाता है।

भोला वोटर क्षणिक आवेश में, हमेशा ठगा जाता है।
भोला वोटर क्षणिक आवेश में हमेशा ठगा जाता है।

जिंदगी

◖ आलोक जैन
उप निदेशक (तकनीकी - समन्वय)

जिन्दगी खुद अपने आपसे बेखबर
ममतामयी छाँव में
खेलती, इठलाती
धूप के झुलसते हुए
टुकड़ों को-
निहारती हैरानी से

जिन्दगी हादसों की सड़क पर
हँसते, रोते मील के पत्थरों के बीच से
गुजरती, लड़खड़ाती, सम्हालती
लड़खड़ाते पाँवों के इस सफर में
सोंच की भी हदें है
किसी पागल वहशी की तरह
महत्वाकांक्षाओं की फौलादी चट्टानों पर,
सिर पटकती, खुद को लहूलुहान करती

जिन्दगी
संध्या बेला में
धूप की चोटे सेंकती
बैठी बबूल की छाँव में
शायद कहीं कोई
कसर रह गई
चिंतन और सियानेपन के-
बहुत नजदीक बैठा हुआ
शून्य मुस्करा दिया।

हिंदी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को
पिरोकर भारतमाता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगा।

-डॉ. जाकिर हुसैन

इक्कीसवीं सदी में ढूंढते रह जाओगे

◖ अर्जुन राजपाल
कनिष्ठ अभियंता (सिविल)

बुद्धिजीवी जो राह दिखाए अध्यापक जो सचमुच पढ़ाएँ
अफसर जो रिश्वत न खाए पिता जो समझाएँ बेटा जो समझ जाए
ढूँढ़ते रह जाओगे पड़ोसी की पहचान मनुष्यता का सम्मान
जीवन में शान होठों पर मुस्कान भीड़ में एक इंसान ढूँढ़ते रह जाओगे।
दोस्तों में विश्वास अपनेपन की आस
वाणी में मिठास शिशु के मुख पर विलास ढूँढ़ते रह जाओगे।
मेहनत का फल ईमानदारी का बल, गंगा का शुद्ध जल
सुख शांति भरा एक पल ढूँढ़ते रह जाओगे।
बच्चों में अनुशासन, बड़ों मे बड़प्पन अनुशासित सभा-समाज
निष्पक्ष एक आवाज ढूँढ़ते रह जाओगे।
रावणों मे राम सच्चो का नाम
नेकी का दाम अच्छाइयों के काम, ढूँढ़ते रह जाओगे।
चारों और शांति चेहरे पर क्रांति
अपनो के मीठे बोल सही माप-तोल, ढूँढ़ते रह जाओगे।
अहिंसा के समाचार सार्थक एक विचार
संतुलित आचार-व्यवहार, ढूँढ़ते रह जाओगे।

आम का पेड़

◖ पुरुषोत्तम गजभिये
भृत्य

पेड़ लगाया आम का हो गया बाझ, कलम लगा दी गांजे की हो गया मैं धनवान।

पेड़ देख आम का आए ना कभी आम, पत्तियाँ बिके आम की कैसो युग आयो हे भगवान।

पत्तियाँ डाल चिल्लम में धुआँ पी रहा इन्सान, नशा होवे ऐसा कि धरा पर दिखे आसमान।

मैने भी पैसा बहुत कमाया ऐसो आराम फरमाया,जिन्दगी है पल भर की जाने का समय आया।

मेरी तरक्की देख गाँव वालो के मन में विचार आया, बोल रे भाया आम के पेड़ पर गांजा कैसे उगाया।

बांझ पेड़ देख मन मे विचार आए अनेक, विचारों में विचार आया एक कलम लगाई गांजे की काम हो जाये नेक।

आम के पेड़ पर गांजे का राज किसी ने बताया पुलिस पास, पेड़ की जब की जा रही थी तपास मैं सुखकर हो गया था कपास।

देख पुलिस के छापे मेरा शरीर थर-थर कांपे,
बात मेरे समझ में आई कि शार्टकट अच्छा नहीं हैं रे भाई
फलती है केवल मेहनत की ही कमाई ॥

एक हरे-भरे पेड़ की पुकार

◖ हीरालाल वासवानी
उच्च श्रेणी लिपिक

नगर-निगम की कुल्हाड़ी से बचे, एक पेड़ न कहा वे सब र्स्ववासी हुए, मैं बचा रहा
न जाने किस जनम का, मेरा-पुण्य फला कि महानगरीकरण यज्ञ में, मैं नहीं जला।
ओ प्रिय साथियों, मेरे लिए भी थोड़ा उधम मचा दो मुझे भी इस कुल्हाड़ी-छाप मौत से बचा दो।
कहोगे तो, गर्मी की छुटिटयों में, मेघों को बुला दूंगा, ठंडी हवाएं और बुलबुल का गाँव दूंगा।
ओ इंश्योरेन्स वालों, ओ पर्यावरण के रखवालों मेरा भी एक भारी सा बीमा करवा दो, मैं तुम्हें प्रीमियम में
फल दूंगा, फूल दूंगा, सुस्ताने को छांव दूंगा ठंडी हवाएं और बुलबुल का गांव दूंगा।
तुम, ओ सभी तुम, जो दूर से देखकर हो जाते हो कहीं गुम। मुझे स्थायी करवा दो, इसी कोने में।
इन दिनों बड़ा वक्त निकल जाता है, सिर्फ रोने में।

अनुभूति

माँ

संकलित ◖ **अनिता पिण्डारी**
निजी सहायक

ऊपर जिसका अंत नहीं उसे आसमाँ कहते हैं,
जहाँ में जिसका अंत नहीं, उसे माँ कहते हैं।।

मौत की आगोश मे जब थक के सो जाती है माँ
तब कहीं जा के सुकून थोड़ा सा पा जाती है माँ

फिक्र में बच्चों की कुछ इस तरह घुल जाती है माँ
नौजवाँ होते हुए बूढी नजर आती है माँ

रूह के रिश्ते की ये गहराइयाँ तो देखिए
चोट लगती हैं जो हमको और चिल्लाती है माँ

कब जरूरत हो मेरे बच्चे को इतना सोच के
जागती रहती है आँखे और सो जाती है माँ

हड्डियों का रस पिला के अपने दिल के चैन को
कितना ही रातों में, खाली पेट सो जाती है माँ

जाने कितनी बर्फ सी रातों में ऐसा भी हुआ
बच्चा तो छाती पे है,गीले में सो जाती है माँ

जब खिलौने को मचलता है कोई गुर्बत का फूल
आँसुओं के साज पर, बच्चे को बहलाती है माँ।

फिक्र के श्मशान में आखिर चिताओं की तरह
जैसे सूखी लकड़ियाँ इस तरह जल जाती है माँ

पहले बच्चों को खिलाती है सुकूनोओं शौक से
बाद मे जो कुछ बचा हो, शौक से खाती है माँ

मांगती है कुछ नहीं, अपने लिए अल्लाह से
अपने बच्चों के लिए दामन को फैलाती है माँ

गर जवाँ बेटी हो घर में और कोई रिश्ता न हो
एक नए एहसास की सूली पे चढ़ जाती है माँ

बाजूओं में खींच के आ जाएगी जैसे कायनात
अपने बच्चे के लिए, बाहों को फैलाती है माँ

जिंदगानी के सफर में, गर्दिशों की धूप में
जब कोई साया नहीं मिलता तो याद आती है माँ

प्यार कहते है किसे और ममता क्या चीज है
कोई उन बच्चों से पूछे, जिनकी मर जाती है माँ

मरते दम तक आ सका बेटा न घर परदेस से
अपनी दोनों पुतलियाँ, चौखट पे रख जाती है माँ

बाद मर जाने के फिर, बेटी की खिदमत के लिए
भेष बेटी का बदलकर, घर में आ जाती है माँ

दूर हो जाती है सारी माँ की उस दिन थकान
ब्याह कर बेटे को, जिस दिन घर बहू लाती है माँ